ईमानदारी और भाईचारा

रिसाले-ए-नूर संग्रह से

मानवता का ईश्वरीय मुठभेड़ श्रृंखला

ईमानदारी और

भाईचारे

* बीसवीं चमक
* इक्कीसवीं चमक
* बाईसवाँ अक्षर

बेदिउज्जमां

सईद नूरसी

TUGHRA BOOKS

न्यू जर्सी

12 11 10 09 1 2 3 4

तुग़रा बुक्स द्वारा प्रकाशित
26 वर्ल्ड्स फेयर डॉ. यूनिट सी
समरसेट, न्यू जर्सी, 08873, संयुक्त राज्य अमेरिका

www.tughrabooks.com

हुसेन अकारसु द्वारा तुर्की से अनुवादित

आईएसबीएन: 978-1-59784-219-8

द्वारा मुद्रित
Çağlayan A.Ş., इज़मिर - तुर्की

विषयसूची

ईमानदारी या इरादे की पवित्रता पर

बीसवीं झलक [द ग्लेम्स से]

इक्कीसवीं झलक [द ग्लेम्स से]

इस्लामिक ब्रदरहुड और सिस्टरहुड

बाईसवाँ पत्र [पत्रिकाओं से]

बेदिउज्जमां और रिसाले-ए नूर

अपने जीवनकाल की उपलब्धियों के कई आयामों के साथ-साथ अपने व्यक्तित्व और चरित्र में, बेदीउज्जमां (1877-1960) मुस्लिम दुनिया में एक महत्वपूर्ण विचारक और लेखक थे और अपने निरंतर प्रभाव के माध्यम से, आज भी हैं। उन्होंने इस्लाम की बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक शक्तियों को सबसे प्रभावी और गहन तरीके से प्रस्तुत किया, जो चौदहवीं शताब्दी के इतिहास में विभिन्न स्तरों पर स्पष्ट है। वे अस्सी-पांच साल तक जीवित रहे। उन्होंने लगभग सभी वर्ष इस्लाम के लिए प्रेम और जोश से भरे हुए, एक बुद्धिमान और संतुलित सक्रियता में बिताए, जो कि ठोस तर्क पर आधारित थी और कुरान और पैगंबर के उदाहरण की छाया में थी।

बेदीउज़्ज़मान उस दौर में रहते थे जब भौतिकवाद अपने चरम पर था और बहुत से लोग साम्यवाद के पीछे पागल थे, और दुनिया बहुत बड़े संकट में थी। उस महत्वपूर्ण दौर में, बेदीउज़्ज़मान ने लोगों को विश्वास के स्रोत की ओर इशारा किया और उनमें सामूहिक बहाली की प्रबल आशा जगाई।

ऐसे समय में जब विज्ञान और दर्शन का प्रयोग युवा पीढ़ी को नास्तिकता की ओर गुमराह करने के लिए किया जा रहा था, तथा शून्यवादी दृष्टिकोण का व्यापक प्रभाव था, ऐसे समय में जब यह सब सभ्यता, आधुनिकीकरण और समकालीन सोच के नाम पर किया जा रहा था और जो लोग इनका विरोध करने की कोशिश करते थे, उन्हें क्रूरतम उत्पीड़न का सामना करना पड़ता था, बेदिउज्जमां ने सम्पूर्ण लोगों के समग्र पुनरुत्थान के लिए प्रयास किया, तथा उनके मन और आत्मा में आधुनिक और पारंपरिक शिक्षा तथा आध्यात्मिक प्रशिक्षण के संस्थानों में जो कुछ भी सिखाया जाता था, उसे फूंक दिया।

बेदिउज़्ज़मान ने देखा था कि आधुनिक अविश्वास विज्ञान और दर्शन से उत्पन्न हुआ है, न कि पहले की तरह अज्ञानता से। उन्होंने लिखा कि प्रकृति ईश्वरीय शक्तियों का संग्रह है।

संकेत और इसलिए विज्ञान और धर्म परस्पर विरोधी विषय नहीं हो सकते। बल्कि, वे एक ही सत्य की दो (स्पष्टतः) भिन्न अभिव्यक्तियाँ हैं। मन को विज्ञान से प्रकाशित किया जाना चाहिए, जबकि हृदय को धर्म से प्रकाशित किया जाना चाहिए।

बेदीउज्जमां शब्द के सामान्य अर्थ में लेखक नहीं थे। उन्होंने अपनी शानदार रचना रिसाले-ए-नूर लिखी, जो 5,000 पृष्ठों से अधिक का संग्रह है, क्योंकि उनका एक मिशन था: उन्होंने विज्ञान और दर्शन द्वारा पोषित विचारों की भौतिकवादी और नास्तिक प्रवृत्तियों के खिलाफ संघर्ष किया और इस्लाम की सच्चाई को हर स्तर की समझ वाले आधुनिक दिमाग और दिलों के सामने पेश करने की कोशिश की। रिसाले-ए-नूर, कुरान की एक आधुनिक टिप्पणी है, जो मुख्य रूप से ईश्वर के अस्तित्व और एकता, पुनरुत्थान, पैगंबर, मुख्य रूप से कुरान सहित ईश्वरीय शास्त्रों, अस्तित्व के अदृश्य क्षेत्रों, ईश्वरीय नियति और मानवता की स्वतंत्र इच्छा, पूजा, मानव जीवन में न्याय और सृष्टि के बीच मानवता के स्थान और कर्तव्य पर केंद्रित है।

लोगों के मन और दिल से झूठे विश्वासों और अवधारणाओं के जमा हुए 'अवसाद' को हटाने और उन्हें बौद्धिक और आध्यात्मिक रूप से शुद्ध करने के लिए, बे-दीउज्जमान जोरदार तरीके से लिखते हैं और दोहराते हैं। वह न तो अकादमिक और न ही उपदेशात्मक तरीके से लिखते हैं; बल्कि वह भावनाओं से अपील करते हैं और लोगों के दिल और दिमाग में अपने विचारों और विचारों को उंडेलने का लक्ष्य रखते हैं ताकि उन्हें विश्वास और दृढ़ विश्वास के लिए जागृत किया जा सके।

इस पुस्तक में रिसाले-ए-नूर संग्रह से चयनित अनुभाग शामिल हैं ।

ईमानदारी या इरादे की पवित्रता पर

बीसवीं झलक [द ग्लेम्स से]

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

हमने तुम्हारे पास सत्य के साथ यह किताब उतारी है, और उसमें कोई झूठ नहीं है। अतः तुम अल्लाह की बन्दगी करो, और उस पर सच्चे ईमान के साथ रहो, और दीन का पालन केवल उसी के लिए करो। और याद रखो कि सारा ईमान, इबादत और आज्ञाकारिता केवल अल्लाह के लिए है। (39:2-3)

ज्ञानी को छोड़कर सभी नष्ट हो सकते हैं, ज्ञानी को छोड़कर सभी नष्ट हो सकते हैं, और जो अभ्यास करते हैं वे भी नष्ट हो सकते हैं, सिवाय ईमानदार को छोड़कर, और ईमानदार लोग गंभीर खतरे में हैं।

ऊपर उद्धृत कुरान की आयतें और हदीसें बताती हैं कि इस्लाम में ईमानदारी कितनी आवश्यक है।

एक बहुत ही महत्वपूर्ण प्रश्न

ऐसा क्यों है कि जबकि ईश्वरीय मार्गदर्शन से बेखबर सांसारिक लोग, यहां तक कि पथभ्रष्ट और पाखंडी लोग भी बिना किसी प्रतिद्वंद्विता के सहयोग कर सकते हैं, वहीं धार्मिक लोग ईश्वरीय मार्गदर्शन से बेखबर हैं, यहां तक कि पथभ्रष्ट और पाखंडी लोग भी बिना किसी प्रतिद्वंद्विता के सहयोग कर सकते हैं?

---

1 अल-अजलूनी, कश्फ अल-खफा', 2:415; अल-ग़ज़ाली, इहयाउ 'उलूम एड-दीन, 3:414। (ट्र.)

लोग और विद्वान, तथा सूफी मार्ग के अनुयायी प्रतिद्वंद्विता में भिन्न हैं। स्वाभाविक रूप से सत्य के अनुयायियों के पक्ष में सहमति होनी चाहिए, तथा मतभेद और संघर्ष पाखंड और भिन्न मार्ग अपनाने के स्वाभाविक परिणाम हैं; ऐसा कैसे हुआ कि उन्होंने अपना स्थान बदल लिया?

उत्तर

मैं इस पीड़ादायक, दुखद और हृदयविदारक स्थिति के अनेक कारणों में से सात कारण बताऊँगा।

पहला

जिस तरह सत्य के लोगों की असहमति सत्य की कमी से नहीं आती, उसी तरह ईश्वरीय मार्गदर्शन से बेखबर सांसारिक लोगों की सहमति सत्य का पालन करने पर आधारित नहीं है। बल्कि, आधुनिक सामाजिक जीवन श्रम विभाजन की मांग करता है और

सामाजिक वर्गों, व्यावसायिक समूहों और राजनीतिक दलों का गठन हुआ, जिनमें से प्रत्येक के अपने विशेष कर्तव्य, वेतन, प्रसिद्धि और लोकप्रिय सम्मान हैं।2

2 एक अनुस्मारक: सार्वजनिक ध्यान और सम्मान की मांग नहीं की जा सकती, बल्कि लोगों द्वारा स्वयं दिया जा सकता है। यदि यह दिया जाता है, तो किसी को इससे प्रसन्न नहीं होना चाहिए। यदि कोई इसे खुशी से स्वीकार करता है, तो वह पाप-ईमानदारी खो देता है और दिखावा उसकी जगह ले लेता है। यदि प्रसिद्धि और सार्वजनिक सम्मान की चाहत के बदले में सार्वजनिक ध्यान और सम्मान मिलता है, तो यह पुरस्कार नहीं बल्कि ईमानदारी की कमी के लिए एक निंदा और सजा है। ईमानदारी के लिए हानिकारक, जो सभी अच्छे कर्मों का जीवन है, प्रसिद्धि और सार्वजनिक ध्यान केवल एक अस्थायी, हल्का आनंद है जो मृत्यु के द्वार तक रहता है।

इसलिए, प्रतिद्वंद्विता, संघर्ष और मतभेद का कोई मतलब नहीं है। यही कारण है कि चाहे कितना भी बुरा क्यों न हो

चाहे जिस भी मार्ग का अनुसरण किया जाए, वे अपने हितों के लिए एक साथ आ सकते हैं।

हालाँकि, धार्मिक लोगों, खास तौर पर विद्वानों और सूफी तरीकों का पालन करने वालों के लिए, उनके कर्तव्य पूरे लोगों से संबंधित हैं, और उनके लिए कोई सांसारिक वेतन निर्धारित नहीं है, न ही उनके लिए कोई निर्दिष्ट स्थान, या प्रसिद्धि या लोकप्रिय स्वीकृति का हिस्सा है। कई लोग एक ही स्थिति की मांग कर सकते हैं, और एक ही भौतिक और अभौतिक पुरस्कार के लिए कई हाथ आगे बढ़ सकते हैं। इससे संघर्ष और प्रतिद्वंद्विता हो सकती है, और कलह और असहमति सद्भाव और सहमति की जगह ले सकती है।

इस भयानक बीमारी का इलाज ईमानदारी है। यानी स्वार्थ के बजाय सच्चाई के प्रति लगाव को प्राथमिकता देना, स्वार्थी उद्देश्यों के बजाय हमेशा सच्चाई को थामे रखना, पैगंबर के इस नियम का पालन करना कि मेरा वेतन केवल ईश्वर से ही मिलना चाहिए (10:72), लोगों से मिलने वाले किसी भी भौतिक या अभौतिक वेतन के प्रति उदासीन रहना;3 और उसके अनुसार

कब्र में यातना का रूप ले लेता है। इसलिए, किसी को सार्वजनिक ध्यान या सम्मान की तलाश नहीं करनी चाहिए, बल्कि इससे सावधान रहना चाहिए और इससे दूर भागना चाहिए। तुम सब जो प्रसिद्धि के इच्छुक हो और जो सार्वजनिक ध्यान और सम्मान की तलाश में हो, सावधान रहो!

3 हमें सहाबा की परोपकारिता या दूसरों को खुद से ज़्यादा तरजीह देने के गुण को एक सिद्धांत के रूप में अपनाना चाहिए, जिसकी क़ुरान में प्रशंसा की गई है। हमें उपहार और दान प्राप्त करने में दूसरों को खुद से ज़्यादा तरजीह देनी चाहिए, और धार्मिक सेवा के लिए किसी सांसारिक प्रतिफल की तलाश नहीं करनी चाहिए।

इस सिद्धांत के साथ कि, रसूल का काम केवल संदेश पहुंचाना है (24: 54), यह जानते हुए कि यह अल्लाह ही है जो चाहे तो लोकप्रिय सम्मान और स्वीकृति प्रदान करेगा, और यह कि लोकप्रिय सम्मान और स्वीकृति प्राप्त करना धार्मिक कर्तव्यों में शामिल नहीं है, व्यक्ति ईमानदारी प्राप्त कर सकता है। अन्यथा, ईमानदारी गायब हो जाएगी।

दूसरा कारण

गुमराह लोग अपनी दीनता की वजह से सहमत होते हैं और साथ देते हैं, जबकि सही राह पर चलने वाले लोग अपनी गरिमा की वजह से असहमत होते हैं। यानी चूंकि दुनियावी लोग असावधानी और गुमराही की वजह से सच्चाई पर आधारित नहीं होते, इसलिए वे कमज़ोर और दीन होते हैं। अपनी दीनता की वजह से उन्हें ताकत और शक्ति की ज़रूरत होती है। यह ज़रूरत उन्हें दूसरों के साथ गठबंधन और मदद करने के लिए प्रेरित करती है। हालाँकि गलत लोग-

---

बुराई। अगर यह बिना मांगे मिल जाए तो इसे ईश्वरीय कृपा समझना चाहिए और लोगों के प्रति किसी तरह का दायित्व नहीं रखना चाहिए। धार्मिक सेवा के बदले में कोई पारिश्रमिक नहीं मांगना चाहिए और न ही लेना चाहिए। धार्मिक सेवा के बदले में कोई सांसारिक प्रतिफल मांगना ईमानदारी को खत्म कर देता है। समुदाय को धार्मिक सेवा करने वाले लोगों की मदद करनी चाहिए, जिन्हें ज़कात में से हिस्सा पाने का भी अधिकार है। लेकिन उन्हें इसकी मांग नहीं करनी चाहिए। अगर यह बिना मांगे मिल जाए तो इसे की गई सेवा का प्रतिफल नहीं समझना चाहिए। बल्कि, व्यक्ति को पूर्ण संतोष के साथ काम करना चाहिए और उन लोगों को तरजीह देनी चाहिए जो उसी सेवा के योग्य हैं और जो अपने से अधिक प्रतिफल के हकदार हैं। इस तरह काम करके कि वह उन लोगों में शामिल हो सके जिनकी क़ुरआन ने प्रशंसा की है, वास्तव में वे उन्हें अपने से अधिक तरजीह देते हैं, भले ही उनका भाग्य गरीबी ही क्यों न हो (59: 9), व्यक्ति ईमानदारी प्राप्त कर सकता है।

वे अपने मार्ग पर चलते हुए भी सहमति बनाए रख सकते हैं। ऐसा लगता है कि वे गलत कामों में सत्य की पक्षपातपूर्णता, गुमराही में ईमानदारी, अधर्म में धार्मिक कट्टरता और पाखंड और मतभेद में एकता खोज लेते हैं, जो उन्हें उनके उद्देश्य में सफल बनाती है।

क्योंकि ईमानदारी कभी निष्फल नहीं होती, चाहे वह बुराई के लिए ही क्यों न हो। जो कुछ भी मनुष्य ईमानदारी से मांगता है, ईश्वर उसे अवश्य देता है।4

लेकिन धार्मिक या सही मार्ग पर चलने वाले लोग, जिनमें विशेष रूप से विद्वान और सूफी मार्ग पर चलने वाले लोग शामिल हैं, सत्य पर आधारित होते हैं और उनमें से प्रत्येक अपने मार्ग पर केवल अपने रब को मानता है और उसकी सहायता पर निर्भर करता है। इसलिए वे सम्मानित होते हैं और जब उन्हें लगता है कि उन्हें ज़रूरत है, तो वे लोगों की बजाय अपने रब की ओर रुख़ करते हैं। अपने द्वारा अपनाए गए मार्गों में कुछ मतभेदों के कारण, उन्हें इन दूसरे मार्गों या अपने अनुयायियों के साथ गठबंधन से मिलने वाली किसी भी सहायता की आवश्यकता महसूस नहीं होती है। इसके अलावा, अगर उनमें एक हद तक अहंकार या स्वार्थपरता है, जो खुद को सही और अपने विरोधियों को गलत मानते हैं, तो सौहार्द और प्रेम की जगह कलह और प्रतिद्वंद्विता ले लेगी। इससे ईमानदारी खत्म हो जाती है और कर्तव्यों को पूरा करने में पूरी तरह से विफलता मिलती है।

इस भयावह स्थिति के गंभीर परिणामों से अनभिज्ञ रहने का इलाज निम्नलिखित नौ सिद्धांतों में निहित है:

4 “जो कोई खोजता है और ईमानदारी से प्रयास करता है, वह पाता है,” यह एक सच्चा सिद्धांत है।

- हमें हमेशा सकारात्मक तरीके से काम करना चाहिए। यानी हमें अपने तरीके से प्यार से काम करना चाहिए और दूसरे सच्चे तरीकों के प्रति शत्रुता या आलोचना को अपने कर्तव्यों की पूर्ति में बाधा डालने या अपने विचारों और कार्यों में भूमिका निभाने की अनुमति नहीं देनी चाहिए।

- हमें इस बात पर विचार करना चाहिए कि इस्लाम के सामान्य क्षेत्र में विशिष्ट मार्गों के बावजूद, इस्लाम में निश्चित रूप से सहमति के अनेक बिंदु और एकता के बंधन हैं जो प्रेम, भाईचारा और सौहार्द उत्पन्न करते हैं और उनकी आवश्यकता होती है।

- इस शर्त पर कि वे दूसरों के मार्ग की आलोचना नहीं करते, सच्चे मार्ग पर चलने वाले प्रत्येक व्यक्ति को यह कहने का अधिकार है कि, “मेरा मार्ग सच्चा है और अधिक सुंदर है,” लेकिन वे दूसरों के मार्ग की असत्यता या कुरूपता का अर्थ यह कहकर नहीं लगा सकते कि, “केवल मेरा मार्ग ही सच्चा है,” या “सुंदर मार्ग केवल मेरा है।” हमें आचरण का यह न्यायपूर्ण नियम अपनाना चाहिए।

- हमें यह विचार करना चाहिए कि सत्य के लोगों के साथ समझौता ईश्वरीय सहायता और सफलता को आकर्षित करता है, और यह धार्मिक जीवन में गरिमा का साधन है।

- यह समझते हुए कि सबसे शक्तिशाली व्यक्तिगत प्रतिरोध भी असफल हो सकता है, और वास्तव में, गुमराह और गलत लोगों की सामूहिक शक्ति के हमलों के सामने असफल हो जाता है, अपनी एकजुटता के कारण, सत्य के लोगों को गुमराह करने वाली उस भयानक सामूहिक शक्ति के खिलाफ सही और न्याय को सुरक्षित रखने के लिए समझौते के माध्यम से एक सामूहिक शक्ति का गठन करना चाहिए।

- हमें झूठ के हमले से सत्य को बचाना होगा।

  हुड. इसलिए,

- हमें धर्म का त्याग कर देना चाहिए, आत्म-केंद्रितता और अहंकार-

  और

- सम्मान और आत्म-सम्मान की गलत अवधारणा को त्यागें, और

- प्रतिद्वंद्विता की व्यर्थ भावना को त्याग दें।

इन नौ सिद्धांतों का पालन करके हम पाप-निष्ठा प्राप्त कर सकते हैं और अपने कर्तव्यों का पूर्णतः पालन कर सकते हैं।

तीसरा कारण

सत्य के मार्ग पर चलने वालों में मतभेद उत्साह या आकांक्षा की कमी से उत्पन्न नहीं होता, न ही गुमराह लोगों की सहमति उच्च आदर्शों या उनके लिए महान प्रयासों से उत्पन्न होती है। बल्कि, सही मार्ग पर चलने वालों की असहमति उनके उच्च उद्देश्य के लिए किए गए प्रयासों के दुरुपयोग से उत्पन्न होती है, जबकि गुमराह लोगों की सहमति कमजोरी से उत्पन्न होती है

---

5 एक हदीस हमें बताती है कि समय के अंत में, ईसा के धर्म के सच्चे अनुयायी कुरान के लोगों के साथ सहयोग करेंगे और अपने आम दुश्मनों, अर्थात् भौतिकवादियों और विधर्मियों का विरोध करने में सक्षम होंगे। इसलिए, इस समय, सत्य और धर्म के लोगों को न केवल धर्म में अपने भाइयों और बहनों के साथ, बल्कि ईसा के धर्म के सच्चे, ईमानदार अनुयायियों, विशेष रूप से उनके बीच के आध्यात्मिक नेताओं के साथ भी ईमानदारी से सहमत होने और सहयोग करने की आवश्यकता है, अपने आम दुश्मनों - धर्म के आक्रामक दुश्मनों के खिलाफ संघर्ष करने के लिए आपस में विवादास्पद मामलों पर बहस करने से अस्थायी रूप से परहेज करना चाहिए।

और नपुंसकता जो किसी उच्च उद्देश्य को न रखने और उसके लिए प्रयास न करने से उत्पन्न होती है।

क्या कारण है कि सही मार्ग पर चलने वाले लोग अपने प्रयासों का दुरुपयोग अपने हित के लिए करते हैं और परिणामस्वरूप कलह की स्थिति पैदा होती है?

और उनके बीच प्रतिद्वंद्विता शाश्वत पुरस्कार और परलोक से संबंधित कर्तव्यों की पूर्ति के लिए उनकी चरम आकांक्षा है, जिसे शाश्वत जीवन के दृष्टिकोण से प्रशंसनीय गुण माना जाता है।

"मैं यह पुरस्कार प्राप्त करूंगा; मैं इन लोगों का मार्गदर्शन करूंगा; वे मेरी बात सुनेंगे" के विचार से वे अपने सच्चे भाई-बहनों के साथ प्रतिद्वंद्विता की स्थिति अपना लेते हैं, जिन्हें उनके प्रेम, सहायता और भाईचारे की वास्तविक आवश्यकता है। विद्वान लोगों का अहंकार, जो उनके मन में यह भावना उत्पन्न करता है कि, "मेरे शिष्य शिक्षा और मार्गदर्शन के लिए उनके पास क्यों जाते हैं? मेरे पास उनके जितने शिष्य क्यों नहीं हैं?", उन्हें लोगों की राय में स्थान लेने या पद के प्रति प्रेम की ओर प्रवृत्त करता है, जो एक बुरा गुण है, और उन्हें ईमानदारी खोने का कारण बनता है, जिससे उनके लिए दिखावे का द्वार खुल जाता है।

इस भूल, इस घाव, इस भयावह आध्यात्मिक बीमारी का इलाज इस प्रकार है:

ईश्वर की प्रसन्नता ईमानदारी से प्राप्त की जा सकती है, अनुयायियों की बहुलता या महान सफलता से नहीं।
क्योंकि यह ईश्वर ही है जो इनको प्रदान करेगा या नहीं करेगा, और इनकी मांग नहीं की जा सकती। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि एक शब्द से ही व्यक्ति का उद्धार हो सकता है और उसे ईश्वर की कृपा प्राप्त हो सकती है। इसलिए, मात्रा

को ज़्यादा महत्व नहीं दिया जाना चाहिए। क्योंकि एक व्यक्ति का मार्गदर्शन कभी-कभी ईश्वर को हज़ारों लोगों के मार्गदर्शन जितना ही प्रिय हो सकता है। इसके अलावा, सच्चाई के प्रति ईमानदारी और लगाव के लिए यह ज़रूरी है कि हम मुसलमानों से ईमानदारी से यह इच्छा रखें कि वे किसी भी व्यक्ति या किसी भी स्कूल या मार्गदर्शन के मार्ग से लाभ उठाएँ। यह सोचना कि, “वे मुझसे सबक लें और मुझे सवाब दिलाएँ!” शारीरिक आत्मा और अहंकार की चाल है।

ऐ इन्सान! हमेशा के लिए सवाब पाने के लालची और आख़िरत के मामले में अपने किए पर नाखुश! बहुत से पैगम्बर ऐसे हुए जिनके मुरीदों की तादाद सीमित थी लेकिन उन्हें नबूवत के पवित्र मिशन का सवाब बेशुमार मिला। इसलिए सच्ची कामयाबी बहुत ज़्यादा मुरीदों का होना नहीं बल्कि अल्लाह की खुशामद हासिल करना है। तू अपने आपको क्या समझता है कि तू यह सोचकर कि "सब मेरी बात सुनें" अपना फ़र्ज़ भूल जाता है और अल्लाह की मर्ज़ी में दखल देता है? यह अल्लाह ही है जो चाहेगा तो लोगों को तुझे स्वीकार करवाएगा और तेरे इर्द-गिर्द जमा करेगा। इसलिए अपना फ़र्ज़ समझ और अल्लाह की मर्ज़ी में दखल न दे।

इसके अलावा, यह केवल मनुष्य ही नहीं है जो सत्य का उपदेश सुनते हैं और जो लोग इसका उपदेश देते हैं, उनके लिए पुरस्कार प्राप्त करते हैं। सर्वशक्तिमान ईश्वर के पास असंख्य अन्य सचेतन प्राणी हैं जैसे कि देवदूत और अन्य आत्मिक प्राणी जो ब्रह्मांड के हर कोने में निवास करते हैं। इसलिए, यदि आप अधिक पुरस्कार चाहते हैं, तो अपने कार्यों की नींव के रूप में ईमानदारी लें और केवल लाभ प्राप्त करने पर विचार करें।

ईश्वर की कृपा से आपके मुख से निकले हुए पवित्र वचनों की हवा में जो भी झलकें हैं, वे आपकी ईमानदारी और इरादे की पवित्रता के माध्यम से जीवन प्राप्त करें और असंख्य चेतन प्राणियों के कानों तक पहुँचें, उन्हें प्रकाशित करें और आपको पुरस्कार दिलाएँ। उदाहरण के लिए, जब आप कहते हैं, "सभी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए हैं," तो ईश्वर की अनुमति से इस कथन के लाखों गुणा प्रतिबिंब हवा में अंकित हो जाते हैं। सर्वज्ञ लेखक, जो व्यर्थ कुछ भी नहीं करता और व्यर्थ कुछ भी नहीं करता, उसने उन धन्य वचनों को सुनने के लिए कई कान बनाए हैं। यदि वे ईमानदारी और इरादे की पवित्रता के माध्यम से जीवन प्राप्त करते हैं, तो ये शब्द किसी स्वादिष्ट फल की तरह आत्माओं के कानों में प्रवेश करते हैं। यदि ईमानदारी नहीं है और ईश्वर की कृपा उन्हें जीवन नहीं देती है, तो वे नहीं सुने जाते हैं, और उनका पुरस्कार मुंह से किए गए एकल, मूल उच्चारण तक सीमित हो जाता है।

,

इस तथ्य पर विशेष रूप से उन लोगों को विचार करना चाहिए जो कुरान को कंठस्थ तो कर लेते हैं, लेकिन असहज महसूस करते हैं, क्योंकि उनकी आवाज उतनी सुन्दर नहीं है और बहुत कम लोग उन्हें सुनते हैं।

चौथा कारण

जिस तरह सही मार्ग पर चलने वाले लोगों के बीच विवादपूर्ण असहमति उनकी अदूरदर्शिता और परिणामों को पहले से न देख पाने की वजह से नहीं होती, उसी तरह गुमराह लोगों के बीच ईमानदारी से सहमति उनकी दूरदर्शिता और परिणामों को ध्यान में रखने की क्षमता से नहीं होती। बल्कि, भले ही वे सही मार्ग पर चलने वाले लोगों द्वारा निर्देशित हों, लेकिन वे गलत मार्ग पर चलने वाले लोगों के बीच ईमानदारी से सहमति नहीं बनाते।

सत्य और धर्म का पालन करने वाले तथा शारीरिक आत्मा के अंध आवेगों से प्रभावित न होकर, सही मार्ग पर चलने वाले लोग हृदय और बुद्धि की दूरदर्शी प्रवृत्तियों का अनुसरण करते हैं, वे ईमानदारी और सरलता को बनाए रखने में असफल रहते हैं और इस प्रकार मतभेद में पड़ जाते हैं।

जहाँ तक गुमराह लोगों का सवाल है, जो शारीरिक आत्मा और वासनाओं के प्रभाव में हैं और इच्छाओं और आवेगों से प्रेरित हैं, जो परिणामों के प्रति अंधे हैं और भविष्य के ढेर सारे सुख की अपेक्षा एक औंस तात्कालिक सुख को प्राथमिकता देते हैं, वे तात्कालिक लाभ और तात्कालिक लाभ के लिए शक्तिशाली, ईमानदार गठबंधनों में एक साथ आ सकते हैं।

सुख। वास्तव में, सांसारिक आत्मा के नीच और हृदयहीन उपासक तत्काल सांसारिक सुखों और लाभों के इर्द-गिर्द ईमानदारी से एक साथ आ सकते हैं। सही मार्गदर्शन वाले लोगों से वास्तव में एक शक्तिशाली, निस्वार्थ एकता बनाने के लिए सीधेपन और पूर्ण ईमानदारी को बनाए रखने की अपेक्षा की जाती है क्योंकि वे उच्च बौद्धिक और आध्यात्मिक सिद्धांतों का पालन करते हैं और मानवीय पूर्णता और परलोक के फल का लक्ष्य रखते हैं। लेकिन चूँकि वे अहंकार और आत्म-केंद्रितता से पूरी तरह मुक्त नहीं हो सकते हैं या खुद को चरम सीमाओं पर जाने से मुक्त नहीं कर सकते हैं, इसलिए वे अपनी सहमति खो देते हैं, जो शक्ति का एक उदात्त स्रोत है, और उनकी ईमानदारी बिखर जाती है। इस प्रकार, परलोक से संबंधित उनके कर्तव्य को नुकसान पहुँचता है। इससे ईश्वर की अच्छी खुशी प्राप्त करना भी वास्तव में कठिन हो जाता है।

इस गंभीर बीमारी का इलाज है, ईश्वर के लिए प्रेम करने के सिद्धांत के मार्गदर्शन में गर्व से सेवा करना।

सीधे मार्ग पर चलने वालों के साथ चलना, उन्हें नेतृत्व सौंपना, अहंकार को त्यागना, यह सोचकर कि जो सीधे मार्ग पर चल रहा है, वह शायद हमसे बेहतर है, और इस तरह ईमानदारी हासिल करना, यह जानना कि ईमानदारी से किया गया एक औंस काम, बिना ईमानदारी के किए गए ढेरों कामों से बेहतर है, और नेतृत्व की अपेक्षा अनुयायी बनना पसंद करना, जो जिम्मेदारी लाता है और इसलिए जोखिम भरा है। ऐसा करने से अहंकार, अति पर जाने और कपट की बीमारी से बचा जा सकता है, जिसका उल्लेख ऊपर किया गया है; वह ईमानदारी हासिल करने और आख़िरत से संबंधित अपने कर्तव्यों को ठीक से पूरा करने में सक्षम होता है।

पांचवा कारण

सही मार्ग पर चलने वाले लोगों की असहमति उनकी कमज़ोरी से नहीं होती, न ही गुमराह लोगों की शक्तिशाली सहमति उनकी ताकत से होती है। बल्कि सही मार्ग पर चलने वाले लोगों में सहमति की कमी उनकी ताकत की वजह से होती है जो कि पूर्ण विश्वास द्वारा प्रदान किए गए सहारे के बिंदु से उत्पन्न होती है, जबकि असावधानी और गुमराह लोगों की सहमति उनकी कमज़ोरी और नपुंसकता की वजह से होती है जो इस तथ्य से उत्पन्न होती है कि उनके दिलों में कोई सहारा का बिंदु नहीं मिल पाता। कमज़ोर शक्तिशाली एकता बनाते हैं क्योंकि उन्हें गठबंधन और सहमति की सख्त ज़रूरत होती है। लेकिन चूँकि शक्तिशाली को इसकी ज़रूरत ज़्यादा महसूस नहीं होती, इसलिए उनकी एकता कमज़ोर होती है। शेरों में यह नहीं होता

संघ की आवश्यकता नहीं है, न ही लोमड़ियों को, और इसलिए वे व्यक्तिगत रूप से रहते हैं, जबकि जंगली बकरियां (और बैल) भेड़ियों और शेरों से खुद को बचाने के लिए झुंड बनाती हैं। इसका मतलब यह है कि कमज़ोर का समुदाय और सामूहिक व्यक्तित्व मज़बूत है, जबकि शक्तिशाली का समुदाय और सामूहिक व्यक्तित्व कमज़ोर है।6 कुरान इस तथ्य का एक सूक्ष्म संकेत करता है। हालाँकि क्रिया के स्त्रीलिंग रूप का इस्तेमाल महिलाओं के समुदाय के लिए किया जाना चाहिए था जहाँ स्त्रीत्व के दो उदाहरण हैं (महिलाएं एक स्त्रीलिंग संज्ञा है, और बहुवचन विषय के रूप में अरबी में क्रिया के स्त्रीलिंग रूप की आवश्यकता होती है), यह क्रिया के पुल्लिंग रूप का उपयोग करता है, और शहर में महिलाओं ने कहा (12: 30)। जबकि रेगिस्तान में अरबों ने कहा (49: इस प्रयोग से यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि कमजोर, दुर्बल और कोमल महिलाओं का समुदाय एकजुटता के साथ शक्ति, कठोरता और कठोरता प्राप्त करता है, और इस प्रकार एक प्रकार की मर्दानगी प्राप्त करता है।

चूँकि यह क्रिया के पुल्लिंग रूप को ग्रहण करता है, इसलिए कुरान में इस रूप का प्रयोग सबसे उपयुक्त है।

इसके विपरीत, चूँकि मजबूत पुरुष, विशेष रूप से ताकतवर

---

6 पश्चिम में सबसे शक्तिशाली और प्रभावशाली संगठनों में से एक है अमेरिकन ऑर्गनाइजेशन फॉर वूमेन राइट्स एंड लिबर्टी, भले ही महिलाएं मानव जाति के बीच निष्पक्ष और कमजोर लिंग का हिस्सा हैं। इसी तरह, राष्ट्रों में सबसे कमजोर और सबसे कम आबादी होने के बावजूद, अर्मेनियाई समितियां सबसे बड़ा त्याग और प्रतिबद्धता प्रदर्शित करती हैं। ये दो तथ्य हमारी थीसिस के लिए एक और सबूत प्रदान करते हैं।

रेगिस्तानी अरब, अपनी व्यक्तिगत शक्ति पर भरोसा करते हैं, उनका समुदाय कमजोरी से ग्रस्त है, जिसमें सतर्कता और समर्थन की कमी की भावना केवल वृद्धि ही करती है।
यही कारण है कि उनका समुदाय एक प्रकार की स्त्रीलिंगता ग्रहण कर लेता है और क्रिया के स्त्रीलिंग रूप की आवश्यकता रखता है; पुनः, कुरान ने इस रूप का सबसे उपयुक्त रूप से उपयोग किया है।

इस प्रकार, परमेश्वर के प्रति समर्पण और विश्वास के कारण, जो परमेश्वर में विश्वास के द्वारा प्रदान किया जाता है, और जो भरोसे का सबसे शक्तिशाली बिन्दु है, सत्य के लोग दूसरों के सामने अपनी ज़रूरत नहीं दिखाते या उनसे मदद नहीं मांगते।
यदि कभी-कभी उन्हें ज़रूरत महसूस भी होती है, तो उन्हें इस मदद को पकड़े रहने की ज़रूरत नहीं होती। लेकिन चूँकि सांसारिक लोग सांसारिक मामलों में मानवता के लिए समर्थन के सच्चे स्रोत की उपेक्षा करते हैं, इसलिए वे कमज़ोरी और नपुंसकता से पीड़ित होते हैं, और इसलिए बाहरी मदद और सहारे की सख्त ज़रूरत में ईमानदारी से और आत्म-बलिदान के साथ भी सहयोग करते हैं।

संक्षेप में, जो सत्यवादी लोग सहमति में निहित उचित शक्ति पर विचार नहीं करते या उसकी खोज नहीं करते, वे इस विचारहीनता के बुरे और हानिकारक परिणाम के रूप में मतभेद में पड़ जाते हैं। लेकिन जो गुमराह लोग झूठे रास्ते पर चलते हैं, वे अपनी कमजोरी के कारण सहमति की शक्ति को समझते हैं और सहमति प्राप्त करते हैं, और यह लक्ष्य प्राप्ति के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण साधन है।

सत्य के लोगों की इस बीमारी का इलाज जीवन में मार्गदर्शन के रूप में शक्तिशाली ईश्वरीय निषेध को अपनाना है, एक दूसरे के साथ विवाद न करें, अन्यथा आप हिम्मत हार जाएंगे और आपकी शक्ति और ऊर्जा आपको छोड़ देगी।

(8:46) और सामाजिक जीवन के लिए ईश्वर की यह बुद्धिमानी भरी आज्ञा कि, सदाचार और भलाई, और धर्म और धर्मपरायणता में एक दूसरे की सहायता करो (5:2)। हमें यह भी विचार करना चाहिए कि मतभेद इस्लाम के लिए कितना हानिकारक है, और यह कैसे गुमराह लोगों को सत्य के लोगों पर विजय दिलाने में सहायक है, और हमें अपनी जन्मजात शक्तिहीनता के प्रति जागरूकता के साथ सच्चाई के लोगों के कारवां में ईमानदारी और आत्म-बलिदान के साथ शामिल होना चाहिए। साथ ही, स्वार्थीपन को त्यागकर और व्यक्तिगत स्वार्थों को भूलकर, हमें दिखावे और दिखावे से मुक्त होना चाहिए, और इस प्रकार ईमानदारी प्राप्त करनी चाहिए।

छठा कारण

सत्य के मार्ग पर चलने वालों की असहमति साहस की कमी, उच्च लक्ष्य की आकांक्षा की कमी या उसकी प्राप्ति के लिए प्रयास की कमी से नहीं आती। न ही सांसारिकता और गुमराही के प्रति लापरवाह लोगों का अपने सांसारिक मामलों में ईमानदारी से सहयोग उनके साहस से, या उच्च आदर्श रखने से, या उसकी प्राप्ति के लिए प्रयास करने से आता है।

बल्कि, चूँकि सत्यवादी लोग अधिकतर परलोक से जुड़े लाभों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, इसलिए वे अपने साहस, आकांक्षाओं और प्रयासों को कई महत्वपूर्ण मामलों में बांट देते हैं। चूँकि वे अपना समय, जो मानवता की सबसे बुनियादी पूंजी है, किसी एक ही चिंता में नहीं लगाते, इसलिए दूसरों के साथ उनका सहयोग मजबूत नहीं हो पाता। उनके पास कर्तव्यों के व्यापक क्षेत्र से जुड़ी कई चिंताएँ होती हैं।

जहाँ तक असावधानी रखने वाले सांसारिक लोगों का प्रश्न है, चूँकि उनका एकमात्र सरोकार सांसारिक जीवन से है, इसलिए वे अपनीसारी शक्ति सांसारिक जीवन से सम्बन्धित विषयों में लगाते हैं और अपनी सारी भावनाओं और क्षमताओं से उन्हीं पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। वे जो कुछ भी उनके सांसारिक सरोकारों में सहायक हो सकता है, उसे दृढ़तापूर्वक पकड़ लेते हैं। एक पागल हीरा व्यापारी की तरह जो कुछ पैसे के काँच के लिए सैकड़ों डॉलर देता है, वे अपना सारा समय, जो कि हर किसी की सबसे बड़ी पूँजी है, उन विषयों पर खर्च करते हैं, जो वास्तव में पाँच पैसे के बराबर हैं और जिनके लिए सत्यवादी लोग अधिक से अधिक दस पैसे दे सकते हैं। परन्तु चूँकि इस प्रकार का लगाव और एकाग्रता, चाहे मिथ्यात्व के लिए ही क्यों न हो, पाप-ईमानदारी का प्रभाव डालती है, इसलिए सांसारिक लोग उन विषयों में सफल होते हैं और सत्यवादियों पर विजय प्राप्त करते हैं। सांसारिक लोगों की यह विजय सत्यवादियों को अपमान, अधीनता, दिखावा और आडम्बर की ओर ले जाती है, जिससे वे ईमानदारी खो देते हैं। वे संसार के कुछ नीच, स्वार्थी और कायर लोगों की चापलूसी करने और उनकी चाटुकारिता करने के लिए विवश महसूस करते हैं।

हे सत्य के लोगों! हे ईश्वरीय जीवन पद्धति और सच्चे आध्यात्मिक पथ के सत्य-प्रेमी अनुयायियों! एक-दूसरे की गलतियों को अनदेखा करके और एक-दूसरे की कमियों के प्रति अपनी आँखें बंद करके कलह और असहमति के इस भयानक रोग का मुकाबला करें। पवित्र मानदंड की आयत में वर्णित अच्छे व्यवहार के साथ कार्य करें, जब वे किसी व्यर्थ और बेकार चीज़ के पास से गुज़रते हैं, तो वे

शान से उससे गुज़रो (25:72)। जब तुम बाहरी हमलों के अधीन हो तो आंतरिक विवादों को त्याग दो और सत्य के लोगों को पतन और अपमान से बचाने को अपना प्राथमिक, सबसे ज़रूरी और महत्वपूर्ण कर्तव्य मानो जो तुम्हारे बाद के जीवन से संबंधित है, आपस में भाईचारा, प्रेम और सहयोग का एहसास करो, जिसका सैकड़ों कुरान की आयतों और पैगंबरी परंपराओं में ज़ोर देकर आदेश दिया गया है। अपनी पूरी ताकत से अपने साथियों और धर्म में भाइयों और बहनों के साथ दुनियावी लोगों के बीच मौजूद एकता से कहीं ज़्यादा मज़बूत एकता स्थापित करो और आपस में किसी तरह का मतभेद या मनमुटाव न होने दो! कभी मत सोचो, "अपना कीमती समय ऐसे महत्वहीन मामलों पर खर्च करने के बजाय, मैं इसे धार्मिक पाठ, प्रार्थना और चिंतन जैसी मूल्यवान चीज़ों पर खर्च करना बेहतर समझूंगा," एकता को अलग और कमज़ोर कर देगा!

क्योंकि जो चीज़ आपको महत्वहीन लगती है, वह इस आध्यात्मिक जिहाद के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो सकती है। जिस तरह कुछ महत्वपूर्ण और विशेष परिस्थितियों में एक व्यक्ति द्वारा रखी गई एक घंटे की निगरानी पूरे साल की पूजा के बराबर हो सकती है, उसी तरह सत्य के लोगों की हार के इस समय में धर्म से संबंधित किसी छोटी सी बात पर आपका एक मूल्यवान दिन हज़ार दिनों के बराबर हो सकता है। चूँकि जो कुछ भी किया जाता है वह ईश्वर के लिए होता है, इसलिए उसे छोटा या बड़ा, मूल्यवान या मूल्यहीन नहीं माना जाता है। ईश्वर के लिए ईमानदारी से खर्च किया गया एक कण भी एक तारे के समान हो जाता है। इसके अलावा, जो महत्वपूर्ण है वह इस्तेमाल किए गए साधनों की प्रकृति नहीं है, बल्कि परिणाम है

जब तक इच्छित परिणाम ईश्वर की अच्छी इच्छा है, और जो कुछ भी किया जाता है वह धार्मिक रूप से वैध है और ईमानदारी से किया जाता है, यानी पूरी तरह से ईश्वर के लिए, यह छोटा नहीं है, बल्कि महान है।

सातवां कारण

हक़ वालों के बीच मतभेद और प्रतिद्वंद्विता दुनिया के प्रति ईर्ष्या या लालच से नहीं आती है, न ही दुनियावी और ग़ाफ़िल लोगों की सहमति उदारता या कुलीनता से आती है। बल्कि हक़ वाले उदारता और प्रयास के लिए जोश को बनाए रखने में असमर्थ हैं, जो कि सत्य और सत्य के मार्ग पर भलाई करने के लिए प्रतिस्पर्धा के प्रशंसनीय रूप से उत्पन्न होते हैं। इस कारण से और सत्य के लिए काम करने के लिए अयोग्य कुछ लोगों की घुसपैठ के कारण, वे उस प्रशंसनीय प्रतिस्पर्धा के रूप का एक हद तक दुरुपयोग करते हैं, और प्रतिद्वंद्विता और मतभेद में पड़ जाते हैं, इस प्रकार खुद को और मुसलमानों की जमात को बहुत नुकसान पहुँचाते हैं।

जहाँ तक सांसारिकता और असावधानी के लोगों का प्रश्न है, वे अपने लाभों को न खो दें, तथा अपने लाभ के लिए जिन नेताओं और साथियों की पूजा करते हैं, उन्हें नाराज न करें, इसलिए वे अपने अपमान, कायरता और उसके लिए किसी उत्कृष्ट लक्ष्य या प्रयास के अभाव में अपने साथियों के साथ हर कीमत पर एकता बनाते हैं, चाहे वे कितने भी पतित, विश्वासघाती और हानिकारक क्यों न हों, तथा अपने साथियों के साथ ईमानदारी से एकजुट होते हैं, चाहे वे उनके हित के लिए किसी भी तरह से क्यों न हों।

वे अपनी ईमानदारी के कारण इस सहयोग से लाभान्वित होते हैं।

अतः हे विखंडित, विपत्तिग्रस्त सत्य-जनो!
चूँकि इस विपत्ति के समय में तुमने ईमानदारी खो दी है और ईश्वर की प्रसन्नता को अपना एकमात्र लक्ष्य नहीं बना पाए हो, इसलिए तुमने सभी सत्यनिष्ठ लोगों को वर्तमान अपमान और पराजय का सामना कराया है। धर्म और परलोक से संबंधित मामलों में कोई प्रतिद्वंद्विता या ईर्ष्या नहीं होनी चाहिए, और वास्तव में सत्य के दृष्टिकोण से दोनों में से कोई भी नहीं हो सकती है। ईर्ष्या और उसके परिणामस्वरूप होने वाली प्रतिद्वंद्विता उस संघर्ष, विवाद और प्रतिस्पर्धा से उत्पन्न होती है जो एक ही वस्तु को प्राप्त करने के लिए कई हाथों के फैलने या एक ही स्थान पर कई आँखों के टिके रहने या एक ही भोजन की माँग करने वाले कई पेटों के कारण होती है। चूँकि दुनिया में कई लोग एक ही चीज़ की चाहत रखते हैं और उसके लिए आवेदन करते हैं, और दुनिया इतनी संकीर्ण और अस्थायी है कि मानवता की असीमित इच्छाओं को पूरा नहीं किया जा सकता है, इसलिए लोग प्रतिद्वंद्विता में पड़ जाते हैं। हालाँकि, परलोक में प्रतिद्वंद्विता का कोई कारण नहीं है, जहाँ प्रत्येक व्यक्ति को एक ऐसा बाग़ दिया जाएगा जिसमें वे पाँच सौ साल तक चल सकते हैं, जिसमें सत्तर हज़ार महल होंगे, और जहाँ जन्नत के हर व्यक्ति को अपने हिस्से से पूरी तरह संतुष्ट किया जाएगा।

7 एक महत्वपूर्ण प्रश्न: ईश्वर के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) से वर्णित है कि जन्नत में एक व्यक्ति को एक बाग़ दिया जाएगा जिसमें वह पाँच सौ साल तक चल सकता है (अत-तिर्मिज़ी, "जन्नत" 8)। हम इसे किस तरह से समझा सकते हैं ताकि लोग इसे समझ सकें?

इसलिए परलोक में शाश्वत सुख पाने के लिए किए गए अच्छे कर्मों को लेकर कोई प्रतिद्वंद्विता या ईर्ष्या नहीं हो सकती। जो ईर्ष्या दिखाता है वह या तो दिखावा करने वाला व्यक्ति है, जो सांसारिक परिणामों की पूर्ति के लिए प्रयास कर रहा है-

---

उत्तर: इस दुनिया में हर किसी के पास एक निजी, अस्थायी दुनिया है जो खुद दुनिया जितनी ही विशाल है। हर किसी का जीवन उनकी निजी दुनिया का स्तंभ है, जिससे वे अपनी सभी बाहरी और आंतरिक इंद्रियों और क्षमताओं से लाभ उठाते हैं। हर व्यक्ति कह सकता है, "सूर्य मेरा दीपक है, और तारे मेरी मोमबत्तियाँ हैं।" अन्य सभी प्राणी उन्हें निजी तौर पर इनका स्वामित्व रखने और उनसे लाभ उठाने से नहीं रोकते; बल्कि, वे हर किसी की निजी दुनिया की सुंदरता और आराम को बढ़ाते हैं।

इसी तरह, हज़ारों महलों और हूरों वाले निजी बगीचे के अलावा, जो दुनिया के किसी भी बगीचे से कहीं ज़्यादा समृद्ध और खूबसूरत है, हर मोमिन को पाँच सौ साल की सैर के बराबर फ़ायदे का एक क्षेत्र मिलेगा। अपनी इंद्रियों के ज़रिए, जो हर एक की सबसे ज़्यादा विकसित होंगी, उन्हें उतना ही आनंद मिलेगा जितना स्वर्ग और अनंत काल उन्हें अनुमति देगा। दूसरों का आनंद स्वर्ग के आम आनंद में दूसरे के हिस्से को नुकसान नहीं पहुँचाएगा; बल्कि यह उसमें इज़ाफ़ा करेगा, जिससे उसका निजी बगीचा और स्वर्ग में हिस्सा और भी ज़्यादा मज़ेदार हो जाएगा। एक व्यक्ति इस दुनिया में एक बगीचे से लाभ उठाता है जो एक घंटे में घूमने के लिए पर्याप्त बड़ा है, एक भ्रमण क्षेत्र से जिसमें एक दिन के लिए पैदल चला जा सकता है, या ग्रामीण इलाकों से जिसमें एक महीने की सैर के लिए पर्याप्त जगह है, या एक महाद्वीप से जिसे पार करने में एक साल लग सकता है, अपने मुँह, कान, आँख, स्वाद की भावना और सभी अन्य इंद्रियों और क्षमताओं के साथ।

इसी तरह, अनंत काल के क्षेत्र में, एक व्यक्ति की गंध और स्वाद की इंद्रियाँ, जो इस दुनिया में केवल एक घंटे की पैदल दूरी के बराबर बड़े बगीचे से लाभ उठा सकती हैं, स्वर्ग में एक साल की पैदल दूरी के बराबर बड़े बगीचे से लाभ उठाएँगी। दृष्टि और श्रवण की क्षमताएँ, जो इस दुनिया में सीमित लाभ उठा सकती हैं, स्वर्ग में एक ऐसे बगीचे से लाभ उठाएँगी जो पाँच सौ साल तक चलने के लिए पर्याप्त विशाल है। प्रत्येक आस्तिक का आनंद दुनिया में अर्जित पुरस्कारों के माध्यम से उनकी इंद्रियों, भावनाओं और क्षमताओं के विकास की डिग्री के अनुपात में होगा।

अच्छे कर्मों की निंदा करने वाला, या एक अज्ञानी भक्त जो अच्छे कर्म करने का कारण नहीं जानता, या यह समझता है कि अच्छे कर्मों की भावना या सार पाप-ईमानदारी है। इस प्रतिद्वंद्विता के कारण भगवान के प्यारे सेवकों के प्रति किसी प्रकार की शत्रुता महसूस करके, ऐसा व्यक्ति एक ऐसी स्थिति अपनाता है जिसके द्वारा वह भगवान की दया की असीम विशालता को नकारता है। आगे एक घटना है जो इस वास्तविकता की पुष्टि करती है:

हमारे एक भूतपूर्व साथी के मन में एक व्यक्ति के प्रति शत्रुता थी। जब हमारे साथी के सामने उस व्यक्ति की उसके अच्छे कामों और यहां तक कि संतत्व के लिए प्रशंसा की गई, तो उसने ईर्ष्या या बेचैनी का कोई लक्षण नहीं दिखाया। लेकिन जब दूसरे ने उससे कहा, "तुम्हारा वह शत्रु साहसी और बलवान है," तो हमने देखा कि उसके अंदर ईर्ष्या और प्रतिद्वंद्विता की तीव्र भावना भड़क उठी।

हमने उससे कहा:

> संतत्व और धर्म शाश्वत जीवन के लिए हीरे के समान मूल्यवान हैं, फिर भी उनके कारण तुमने अपने शत्रुओं से ईर्ष्या नहीं की। लेकिन सांसारिक शक्ति बैलों में और साहस जंगली भेड़ियों में पाया जाता है, और संतत्व और धर्म के साथ तुलना करने पर वे हीरे की तुलना में कांच के टुकड़े के समान हैं।

आदमी ने उत्तर दिया:

> हम दोनों ने इस दुनिया में एक ही चीज़, एक ही स्थिति पर अपनी नज़रें टिकाई हैं। जिस कदम से हम उस तक पहुँचेंगे, वो हैं ताकत और हिम्मत जैसी चीज़ें।

इसीलिए मैं उससे ईर्ष्या करता था। लेकिन परलोक में अनगिनत पद हैं। भले ही वह यहाँ मेरा दुश्मन हो, लेकिन वहाँ वह मेरा सच्चा, प्रिय भाई हो सकता है।

हे सत्य के लोगों और आध्यात्मिक पथ के अनुयायियों!
सत्य की सेवा करना एक बहुत भारी खजाना ढोने और उसे सुरक्षित रखने के समान है। इसे अपने कंधों पर उठाने वालों की सहायता के लिए जितने अधिक शक्तिशाली हाथ दौड़ेंगे, वे उतने ही अधिक प्रसन्न और प्रसन्न होंगे। ईर्ष्या करने के स्थान पर, हमें इन सच्चे भाइयों और आत्म-त्यागी सहायकों की श्रेष्ठ शक्ति, प्रभावकारिता और सहायता की गर्व और प्रेमपूर्वक सराहना करनी चाहिए, जो उनकी सहायता के लिए आगे आते हैं; फिर हम उनके साथ प्रतिद्वंद्विता क्यों करते हैं, जिससे हम ईमानदारी खो देते हैं? सांसारिक, भ्रमित लोगों की दृष्टि में, जो स्वयं तुमसे सौ गुना निम्न हैं, क्योंकि उनका मार्ग तुमसे निम्न है, तुम अपने आप को धर्म का दुरुपयोग करके संसार कमाने, सत्य के ज्ञान का शोषण करके अपनी आजीविका कमाने और सांसारिक हितों के लिए महत्वाकांक्षी और लालची प्रतिस्पर्धा करने जैसे भयानक आरोपों के लिए क्यों उजागर करते हो?

इस रोग का एकमात्र उपचार है अपनी आत्मा की निन्दा करना तथा अपनी आत्मा के विरुद्ध दूसरों का पक्ष लेना। शास्त्रार्थ की कला में विद्वानों द्वारा अपनाए गए तथा स्थापित निम्नलिखित सिद्धांत का भी पालन करना चाहिए: "जो व्यक्ति किसी विषय पर शास्त्रार्थ करते समय अपने सिद्धान्त को सत्य सिद्ध करना चाहता है तथा उससे प्रसन्न होता है, वह अपने आपको दोष नहीं देता।

इसका सही होना और विरोधी पक्ष का गलत और भूलपूर्ण होना, अनुचित है।" ऐसा व्यक्ति भी नुकसान में है, क्योंकि जब वे बहस जीतते हैं, तो वे कुछ भी नया नहीं सीखते हैं; बल्कि, उनका संभावित अभिमान उन्हें और अधिक नुकसान पहुंचा सकता है। लेकिन अगर सच सच निकला तो

विरोधी पक्ष में, वे पहले से अज्ञात कुछ सीख चुके होंगे और इस तरह कुछ लाभदायक हासिल कर चुके होंगे, साथ ही संभावित अभिमान से भी बच चुके होंगे। इसलिए, एक निष्पक्ष, सत्य-प्रेमी व्यक्ति सत्य के लिए अपनी शारीरिक आत्मा के अभिमान को चोट पहुँचाता है। जब वे अपने प्रतिद्वंद्वी के हाथ में सत्य देखते हैं, तो वे स्वेच्छा से इसे स्वीकार करते हैं और इसका समर्थन करते हैं।

यदि धर्म, सत्य और ज्ञान के अनुयायी तथा आध्यात्मिक पथ के अनुयायी इस सिद्धांत को अपना लें, तो वे ईमानदारी प्राप्त करेंगे, परलोक से संबंधित अपने कर्तव्यों में सफल होंगे तथा वर्तमान दुखद पतन और दुर्दशा से भी ईश्वर की दया से बच जाएंगे।

> तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

ईमानदारी या इरादे की पवित्रता पर

इक्कीसवीं झलक [द ग्लेम्स से]

इस पुस्तक को कम से कम पखवाड़े में एक बार अवश्य पढ़ा जाना चाहिए।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

ईश्वर की उपस्थिति में पूरी निष्ठा और आज्ञाकारिता के साथ खड़े रहो (2: 238)। एक दूसरे से विवाद मत करो, वरना तुम हिम्मत हार जाओगे और तुम्हारी शक्ति और ऊर्जा तुम्हें छोड़ देगी (8: 46)। वह वास्तव में समृद्ध है जिसने इसे पवित्रता से उगाया है। और वह वास्तव में खो गया है जिसने इसे भ्रष्ट कर दिया है (91: 9-10)। मेरे रहस्योद्घाटन को तुच्छ मूल्य पर मत बेचो (2: 41)।

ऐ मेरे आख़िरत के भाइयों और बहनों और क़ुरआन की सेवा में साथियों! तुम्हें मालूम होना चाहिए - वास्तव में तुम्हें मालूम है - कि इस दुनिया में और विशेष रूप से आख़िरत के लिए की जाने वाली सेवाओं में, सबसे महत्वपूर्ण आधार और सबसे बड़ी शक्ति और सबसे स्वीकार्य सिफ़ारिश और सबसे मज़बूत भरोसा और सच्चाई का सबसे छोटा रास्ता और सबसे ज़्यादा जवाबदेह प्रार्थना और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का सबसे धन्य और अद्भुत साधन और सबसे उत्कृष्ट सद्गुण और पूजा का सबसे शुद्ध रूप ईमानदारी है, या

केवल ईश्वर के लिए कुछ अच्छा या कोई धार्मिक कार्य करना। चूँकि ईमानदारी में बहुत प्रकार की शक्ति और प्रकाश है, जैसा कि ऊपर बताया गया है, और चूँकि इस भयंकर समय में, भयंकर शत्रुता के सामने, कठोर दबाव में, तथा धर्म में बलपूर्वक विधर्मी आविष्कारों और अनेक प्रकार की गुमराही के बीच, ईश्वरीय कृपा से हमारे कंधों पर ईमान और कुरान की सेवा करने का एक बहुत भारी, महत्वपूर्ण, व्यापक और पवित्र कर्तव्य डाला गया है, भले ही हम शक्तिहीन, अभावग्रस्त और संख्या में कम हैं; इसलिए हम निश्चित रूप से अपनी पूरी शक्ति के साथ ईमानदारी हासिल करने के लिए हर किसी से अधिक बाध्य हैं और इसे अपने अंदर विकसित करने की सख्त जरूरत है। अन्यथा, हमारी पवित्र सेवा में हमारी उपलब्धियाँ आंशिक रूप से नष्ट हो जाएँगी और हम इसे जारी रखने में सक्षम नहीं होंगे; हम जिम्मेदार ठहराए जाएँगे। इसके अलावा, हम ईश्वरीय निषेध में निहित गंभीर धमकी का लक्ष्य बनेंगे, मेरी आयतों को तुच्छ मूल्य पर न बेचो (2: 41), और शाश्वत खुशी के नुकसान के लिए ईमानदारी को नुकसान पहुंचाकर और कुछ हानिकारक, निराशाजनक, अहंकारी, प्रतिकारक, पाखंडी आधार भावनाओं या तुच्छ लाभों के लिए, हम इस सेवा में अपने भाइयों और बहनों के अधिकारों का उल्लंघन करेंगे और कुरान की सेवा के कर्तव्य का उल्लंघन करेंगे, विश्वास की सच्चाइयों का अपमान करेंगे।

हे मेरे भाईयों और बहनों! महान अच्छे कामों के सामने अनेक हानिकारक बाधाएँ आती हैं। शैतान प्रयास करता है

जो लोग इन कामों को करने की कोशिश करते हैं, उनके खिलाफ़ हम ईमानदारी की ताकत पर भरोसा करते हैं। हमें इन बाधाओं और शैतानों के खिलाफ़ ईमानदारी की ताकत पर भरोसा करना चाहिए। हमें ईमानदारी को नुकसान पहुँचाने वाली चीज़ों से उसी हद तक बचना चाहिए, जिस हद तक हम साँपों और बिच्छुओं से बचते हैं। जैसा कि पैगंबर जोसेफ ने कहा था, "फिर भी मैं खुद को त्रुटि से मुक्त नहीं कहता, क्योंकि निश्चित रूप से मानव शारीरिक आत्मा हमेशा बुराई का आदेश देती है, सिवाय इसके कि मेरे भगवान की दया हो," (12: 53) शारीरिक, बुराई का आदेश देने वाली आत्मा पर भरोसा नहीं किया जाना चाहिए। अहंकार या बुराई का आदेश देने वाली आत्मा को अपने आप को धोखा न दें! ईमानदारी से पहले बाधाओं को दूर करने के लिए ताकि हम ईमानदारी हासिल करें और उसे बनाए रखें, निम्नलिखित सिद्धांतों को आपके लिए एक मार्गदर्शक होने दें:

आपका पहला सिद्धांत

तुम्हें अपने कामों में खुदा की रजा का पीछा करना चाहिए। अगर वह तुमसे खुश है तो चाहे पूरी दुनिया नाराज़ हो जाए, इसका कोई मतलब नहीं है। अगर वह मंजूर है तो इसका कोई मतलब नहीं है, भले ही दूसरे तुम्हारे विचारों और कामों को नकार दें। जब वह खुश होता है और मंजूर करता है तो भले ही तुम दूसरों की रजा न भी मांगो, अगर वह चाहे और उसकी हिकमत इसकी मांग करे तो वह दूसरों को भी इसे मंजूर करवा देगा और तुमसे खुश करवाएगा। इस वजह से, कुरान और ईमान की सेवा में खुदा की रजा का लक्ष्य रखना बिल्कुल जरूरी है।

आपका दूसरा सिद्धांत

अपने भाईयों और बहनों की कुरान या ईमान की सेवा में आलोचना न करो और अपनी विशेषताओं का प्रदर्शन करके उनकी ईर्ष्या को न भड़काओ।

क्योंकि मनुष्य के हाथ एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा नहीं करते, न उनकी आंखें एक दूसरे की निन्दा करती हैं, न उनकी जीभ उनके कानों का विरोध करती है, न उनका हृदय आत्मा की गलतियों को देखता है। बल्कि, उनके अंग एक दूसरे की कमियों को पूरा करते हैं, एक दूसरे की कमियों को छिपाते हैं, एक दूसरे की ज़रूरतों को पूरा करने में एक दूसरे की सहायता करते हैं, और एक दूसरे के कर्तव्यों में एक दूसरे की मदद करते हैं। अन्यथा, उस व्यक्ति के शरीर का जीवन समाप्त हो जाएगा, उसकी आत्मा चली जाएगी, और उसका शरीर सड़ जाएगा।

इसी तरह, एक कारखाने के घटक एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा में नहीं होते हैं, न ही वे एक दूसरे पर वरीयता लेने या हावी होने का प्रयास करते हैं। न ही वे एक दूसरे में दोष ढूंढते हैं या एक दूसरे की आलोचना करते हैं, एक दूसरे के काम के प्रति उत्साह को नष्ट करते हैं या दूसरों को आलस्य में डालते हैं। बल्कि वे एक दूसरे को एक सामान्य लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपनी पूरी क्षमता के साथ काम करने में मदद करते हैं, और सच्ची एकजुटता और एकता में अपने अस्तित्व के उद्देश्य की प्राप्ति की ओर बढ़ते हैं। अगर थोड़ा सा भी अतिक्रमण या वर्चस्व हस्तक्षेप करता है, तो यह कारखाने के काम में गड़बड़ी पैदा करेगा, जिससे यह बेकार हो जाएगा। परिणामस्वरूप, कारखाने का मालिक इसे पूरी तरह से नष्ट कर देगा।

और इसलिए, ऐ रिसाले-ए-नूर के छात्र जो कुरान की सेवा करते हैं! हम एक सामूहिक व्यक्तित्व के सदस्य हैं जो "पूर्ण या सार्वभौमिक मानव" की उपाधि के योग्य हैं। हम एक कारखाने के घटकों की तरह हैं जो शाश्वत जीवन में शाश्वत खुशी के लिए काम करते हैं। हम एक धन्य जहाज के चालक दल भी हैं जिसका लक्ष्य मुहम्मद के समुदाय को, उन पर शांति और आशीर्वाद हो, मोक्ष के तट पर ले जाना है, जो शांति और खुशी के निवास का तट है। इसलिए, हमें सच्ची एकजुटता और एकता का एहसास करने की आवश्यकता है और हम इसके लिए बाध्य हैं, जिसे केवल ईमानदारी के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है और जो चार लोगों के लिए एक हजार एक सौ ग्यारह की शक्ति प्राप्त कर सकता है।

यदि तीन '1' एकजुट नहीं होते या एक साथ नहीं आते, तो उनका मूल्य केवल 3 होगा। लेकिन यदि वे एकजुट होते या एक साथ आते हैं, तो उनका मूल्य 111 होगा। चार अलग-अलग '4' मिलकर 16 बनते हैं। लेकिन यदि वे एक ही कर्तव्य की पूर्ति के लिए एक ही रास्ते पर सच्चे भाईचारे में एक साथ आते हैं, तो उनका मूल्य 4444 की शक्ति के बराबर होगा। इतिहास में ऐसी कई घटनाएं दर्ज हैं जो इस बात की गवाह हैं कि सच्चे भाईचारे में 16 आत्म-बलिदान करने वाले लोगों ने 4000 से अधिक लोगों की नैतिक शक्ति प्राप्त की है।9 ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति-

---

8 चार 1 को एक साथ रखने पर 1111 बनता है। (ट्र.)

9 अनगिनत लाभों और फायदों का साधन होने के अलावा, ईमानदारी पर आधारित एकजुटता और एकता भय और यहां तक कि मौत के खिलाफ सबसे मजबूत ढाल और सहारा है।

सच्चे, सच्चे मिलन में रहने वाले लोग दूसरे भाई-बहनों की आँखों से भी देख सकते हैं और उनके कानों से भी सुन सकते हैं। ऐसा लगता है मानो सच्ची एकजुटता और एकता में रहने वाले दस लोगों में से हर एक के पास बीस आँखों से देखने, दस बुद्धि से सोचने, बीस कानों से सुनने और बीस हाथों से काम करने का मूल्य और शक्ति है।

आपका तीसरा सिद्धांत

तुम्हें पता होना चाहिए कि तुम्हारी सारी शक्ति ईमानदारी और सच्चाई में निहित है। वास्तव में, शक्ति सच्चाई और ईमानदारी में निहित है।
यहां तक कि जो लोग गलत हैं, वे भी गलत होते हुए भी ईमानदारी के कारण शक्ति प्राप्त कर सकते हैं।

कुरान की सेवा और ईमान इस बात का सबूत है कि ताकत सच्चाई और ईमानदारी में निहित है। हम यहाँ सात या आठ साल की सेवा में जो करने की कोशिश कर रहे हैं, वह मेरे मूल क्षेत्र और इस्तांबुल में शिक्षा और धर्म के लिए बीस साल की सेवा से सौ गुना अधिक है। इसके अलावा, मेरे क्षेत्र और इस्तांबुल में मेरे पास मेरे साथ काम करने वाले भाइयों और बहनों की तुलना में सैकड़ों ज़्यादा सहायक थे,

---

मृत्यु आती है, तो एक आत्मा ले जाती है। जो व्यक्ति परलोक से संबंधित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए ईश्वर की प्रसन्नता के मार्ग पर अपने साथियों के साथ सच्ची एकता से प्रयास करता है, उसके पास उतनी ही आत्माएँ होती हैं, जितने उसके भाई-बहन होते हैं। इसलिए, ऐसा व्यक्ति मृत्यु का सामना मुस्कुराते हुए करता है और कहता है, "भले ही मेरी केवल एक आत्मा मर जाए, लेकिन मेरी अन्य आत्माएँ जीवित रहेंगी और मुझे उतना ही पुरस्कार दिलाएँगी, जितना वे दिलाती हैं। इसलिए इन आत्माओं के माध्यम से, मैं पुरस्कार के लिए जीता रहूँगा; मैं केवल पाप के लिए मर रहा हूँ।"

यहाँ मैं अकेला हूँ, एक अजनबी हूँ, और अन्यायी अधिकारियों की निगरानी में हूँ और उनके द्वारा सताए जा रहा हूँ। इसलिए, मुझे इस बात में कोई संदेह नहीं है कि जो शक्ति यहाँ हमारी सात या आठ साल की सेवा को मेरे पिछले बीस साल की सेवा से सौ गुना अधिक सफल बनाती है, वह आपकी ईमानदारी से आती है। मैं यह भी स्वीकार करता हूँ कि आपकी गहन ईमानदारी के माध्यम से आपने मुझे उस दिखावे से कुछ हद तक बचाया है जो कि

प्रसिद्धि और यश जो मेरी आत्मा को प्रसन्न करता है। मुझे आशा है कि भगवान आपको पूर्ण ईमानदारी प्राप्त करने में सक्षम बनाएंगे और मुझे भी इसे प्राप्त करने में मदद करेंगे।

तुम जानते हो कि आध्यात्मिकता के सभी नायक तुम्हारी ईमानदारी के कारण तुम्हारा समर्थन करते हैं। यदि तुम उनका निरंतर समर्थन प्राप्त करना चाहते हो, तो तुम्हें पूर्ण ईमानदारी प्राप्त करनी चाहिए, जैसा कि वर्णित है, वे उन्हें (धर्म में अपने भाइयों और बहनों को) अपने से अधिक पसंद करते हैं (59: 9)।

अपने भाई-बहनों की आत्माओं को सम्मान, पद, सार्वजनिक स्वीकृति और यहाँ तक कि भौतिक लाभों जैसी चीज़ों में भी प्राथमिकता दें, जिनसे शारीरिक आत्मा मोहित होती है। इतने उदार बनो कि तुम प्रसन्न हो कि तुम्हारा कोई मित्र, न कि तुम, उन लोगों को विश्वास का सबसे सूक्ष्म और बढ़िया सत्य बता रहा है जो तुम्हारे भीतर हैं।

इसकी आवश्यकता है, इस प्रकार आप अहंकारी महसूस करने से बच जाते हैं। यदि आप ऐसी सच्चाईयों को बताकर कोई पुरस्कार प्राप्त करना चाहते हैं, तो यह हानिरहित है और इसमें कोई पाप नहीं है, लेकिन ईमानदारी और उदारता की भावना, जो हमेशा आपके बीच मौजूद होनी चाहिए, क्षतिग्रस्त हो सकती है।

आपका चौथा सिद्धांत

मानो आप ही अपने भाइयों और बहनों के गुण और सद्गुणों के स्वामी हैं, उन पर गर्व करें और उनके लिए ईश्वर के प्रति आभारी रहें।

सूफी आपस में ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं, 'मार्गदर्शक में विनाश' और 'संदेशवाहक में विनाश'। मैं जैसा सूफी नहीं हूं, लेकिन हमें आपस में 'भाई-बहनों में विनाश' जैसा सिद्धांत अपनाना चाहिए। इसे भाई-बहनों के बीच 'परस्पर विनाश' कहते हैं। इसका अर्थ है भाई-बहनों का एक-दूसरे में विनाश। यानी अपने गुणों और उनसे उत्पन्न होने वाले गर्व को भूलकर प्रत्येक व्यक्ति अपने भाई-बहनों के गुणों और भावनाओं को अपने मन में रखकर जीता है। हमारे मार्ग का आधार भाईचारा है। तुम्हारे साथ मेरा रिश्ता पिता और बच्चों या सूफी मार्गदर्शक और उसके शिष्यों जैसा नहीं है। यह तो भाई-बहनों के बीच का रिश्ता है। अधिक से अधिक, इसमें मेरे शिक्षण के पद का कुछ हिस्सा हो सकता है।

हमारा तरीका भी सबसे करीबी दोस्ती का है। दोस्ती के लिए सबसे करीबी, सबसे ज़्यादा त्याग करने वाला दोस्त, सबसे ज़्यादा सराहना करने वाला साथी और सबसे उदार भाई या बहन होना ज़रूरी है। इस तरह की दोस्ती का आधार दिल से की गई ईमानदारी है। जो इस ईमानदारी को नष्ट कर देता है, वह दोस्ती के शिखर से गिर जाता है। वे संभवतः बहुत गहरे गड्ढे की तह में गिर सकते हैं। उन्हें बीच में कुछ भी नहीं मिलता जिससे वे चिपके रह सकें।

दो रास्ते हैं। यह संभव है कि जो लोग अब हमारे इस रास्ते को छोड़ देते हैं, जो कि कुरान का महान राजमार्ग है, वे अनजाने में ही उस परस्त्री-शक्ति की सहायता करते हैं, जो हमारे लिए शत्रुतापूर्ण है। मुझे उम्मीद है कि ईश्वर उन लोगों को सक्षम बनाएगा जो रिसाले-ए-नूर **के माध्यम से कुरान के चमत्कारिक व्याख्या के पवित्र क्षेत्र में प्रवेश करते हैं** , ताकि वे हमेशा प्रकाश, ईमानदारी और विश्वास का समर्थन करें और कभी भी ऐसे गड्ढों में न गिरें।

ऐ मेरे क़ुरआन की सेवा में लगे दोस्तों! ईमानदारी प्राप्त करने और उसे बनाए रखने का सबसे प्रभावशाली साधन है "मृत्यु का चिंतन।" जबकि दीर्घकालिक सांसारिक महत्वाकांक्षाएँ ईमानदारी को नुकसान पहुँचाती हैं और दिखावे और सांसारिकता का कारण बनती हैं, "मृत्यु का चिंतन" व्यक्ति को दिखावे से घृणा करने और ईमानदारी प्राप्त करने की ओर ले जाता है। मृत्यु को कभी न भूलने और इस सांसारिक जीवन की क्षणभंगुर प्रकृति पर हमेशा विचार करने से, व्यक्ति शारीरिक आत्मा की चालों से बच सकता है। अनुयायी

सूफी मार्ग और सत्य के मार्ग पर चलने वाले लोग जो कुरान की इस घोषणा का पालन करते हैं, " हर आत्मा को मृत्यु का स्वाद चखना ही है (3:185), और तुम अवश्य मरोगे, और निश्चित रूप से वे भी मरेंगे (39:30), ने अपनी आध्यात्मिक यात्रा में मृत्यु के चिंतन को एक सिद्धांत के रूप में अपनाया है और दुनिया में हमेशा के लिए रहने के भ्रम को दूर कर दिया है। वे खुद को मरते हुए, नहाए हुए और कब्र में दफनाए जाने की कल्पना करते हैं। मृत्यु के इस लंबे चिंतन से प्रभावित होकर, वे एक हद तक लंबे समय तक सांसारिक बंधनों को त्यागने में सक्षम हो जाते हैं।

महत्वाकांक्षाएँ। इस तरह के चिंतन के कई फायदे हैं। पैगंबर की यह कहावत, "अक्सर उस बात को याद करो जो सुखों को दूर करती है और उन्हें कड़वा बनाती है,"10 हमें इस तरह के चिंतन के लिए प्रेरित करती है। हालाँकि, चूँकि हमारा रास्ता सूफी नहीं है, बल्कि सच्चाई की ओर सीधे यात्रा करने का रास्ता है, इसलिए हमारे लिए सूफियों की तरह काल्पनिक या काल्पनिक रूप में ऐसा करना ज़रूरी नहीं है। भविष्य को वर्तमान में लाने के लिए उस पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, हमें मन में भविष्य में जाना चाहिए, और उसका चिंतन करना चाहिए।

कल्पना या अनुमान की आवश्यकता के बिना, कोई व्यक्ति अपनी लाश को देख सकता है, जो जीवन के वृक्ष पर एकमात्र फल है। आप न केवल अपनी मृत्यु देखेंगे, बल्कि कुछ दूरी पर अपने युग की मृत्यु भी देख सकते हैं। यदि कोई थोड़ा आगे जाता है, तो वह दुनिया की मृत्यु को देख सकता है, और यह पूर्ण ईमानदारी का मार्ग खोलता है।

ईमानदारी प्राप्त करने का एक और महत्वपूर्ण साधन यह है कि, निश्चित, सत्यापित विश्वास और ईश्वर की कलाकृतियों - संपूर्ण सृष्टि - पर विश्वास-निर्देशित चिंतन के प्रकाश के आधार पर, जो निर्माता के ज्ञान की ओर ले जाता है, हम सर्व-दयालु निर्माता की सर्वव्यापकता का अनुभव कर सकते हैं, और उसके अलावा किसी अन्य की स्वीकृति या ध्यान की मांग किए बिना, और यह समझते हुए कि उसकी उपस्थिति में मदद के लिए दूसरों की ओर देखना उसकी उपस्थिति में सही आचरण नहीं है, हम कर सकते हैं

---

10 एट-तिर्मिधि, "क़ियामा" 86; अन-नासाई, "जनाईज़" 3. (ट्र.)

दिखावे से बचें और ईमानदारी प्राप्त करें। इस तरह की उपलब्धि के कई स्तर और चरण हैं।

इंसान को अपने हिस्से से जितना भी फायदा हो सके, उतना ही फायदा है। रिसाले-ए-नूर में और भी कई ऐसी सच्चाईयाँ बताई गई हैं जो इंसान को दिखावे से बचा सकती हैं और उसे ईमानदारी हासिल करा सकती हैं, इसलिए हम यहाँ चर्चा को यहीं खत्म कर देते हैं।

ईमानदारी को नष्ट करने वाली चीजें

ईमानदारी को नष्ट करने वाली और दिखावे की ओर ले जाने वाली अनेक बातों में से मैं दो या तीन का संक्षेप में उल्लेख करूंगा:

पहला यह कि भौतिक लाभों की होड़ धीरे-धीरे ईमानदारी को नष्ट कर देती है। यह किसी भी सेवा के परिणामों को भी नुकसान पहुंचाती है और वांछित भौतिक लाभ को भी खो देती है।

हमारे लोगों ने हमेशा उन लोगों के प्रति सम्मान का भाव रखा है जो सत्य और परलोक के लिए प्रयास करते हैं और उनकी सहायता की है। उनकी ईमानदारी और निष्ठा से की जाने वाली सेवा में हिस्सा लेने के इरादे से हमारे लोगों ने उनकी सहायता करने का प्रयास किया है ताकि ऐसे लोग अपनी आजीविका कमाने में व्यस्त न रहें और इस तरह अपना समय बर्बाद न करें। हालाँकि, मदद और सम्मान की माँग या मांग नहीं की जानी चाहिए; उन्हें स्वेच्छा से दिया जाना चाहिए। न ही उनकी अपेक्षा की जानी चाहिए या उन्हें यह आभास दिया जाना चाहिए कि उन्हें उनकी ज़रूरत है। ऐसा समर्थन बिना किसी अपेक्षा के मिलना चाहिए। अन्यथा

ईमानदारी को नुकसान पहुंचेगा, और व्यक्ति कुरान की इस निषेधाज्ञा का लक्ष्य बन सकता है कि, मेरी आयतों को तुच्छ मूल्य पर न बेचो (2:41), जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति के अच्छे कर्म ईश्वर को स्वीकार्य नहीं होंगे।

इस प्रकार, शारीरिक आत्मा, पहले भौतिक लाभ की इच्छा और अपेक्षा करती है, फिर उसे दूसरों को न मिलने देना चाहती है, जिससे एक सच्चे भाई या बहन या उसी सेवा में साथी के प्रति प्रतिद्वंद्विता की भावना पैदा होती है। यह ईमानदारी को नुकसान पहुँचाता है, और की गई सेवा के लिए अपवित्र है; व्यक्ति सत्य और विवेक वाले लोगों की नज़र में अप्रिय और अप्रिय हो जाता है। यह इच्छित भौतिक लाभ की हानि का भी कारण बनता है। इस मामले को बहुत विस्तार से बताने की आवश्यकता है। इसलिए, मैं इसे यहाँ संक्षिप्त करूँगा और दो उदाहरण बताऊँगा जो मेरे सच्चे भाइयों और बहनों की ईमानदारी और उनके बीच एकता को मजबूत करेंगे।

पहला उदाहरण यह है कि बहुत अधिक धन और शक्ति प्राप्त करने के लिए सांसारिक लोगों और यहाँ तक कि कुछ राजनेताओं, समितियों और सामाजिक जीवन के कुछ जोड़-तोड़ करने वालों ने भी धन में भागीदारी या कॉर्पोरेट स्वामित्व के सिद्धांत को अपनाया है। इस अभ्यास से होने वाले सभी नुकसानों और दुरुपयोगों के बावजूद वे एक अद्भुत शक्ति और लाभ भी प्राप्त कर सकते हैं।

,

हालाँकि, संपत्ति में भागीदारी के कई नुकसान हैं और इससे संपत्ति की प्रकृति में कोई बदलाव नहीं आता। हालाँकि प्रत्येक भागीदार सैद्धांतिक रूप से स्वामित्व का आनंद लेता है, लेकिन वे इससे लाभ नहीं उठा सकते। लेकिन अगर विश्वासी इसे अपनाते हैं

आख़िरत से जुड़े कामों में अगर वह उसूल से काम करे तो उससे बहुत फ़ायदा होगा और कोई नुक़सान नहीं होगा, क्योंकि हर शख़्स उन सारे कामों का पूरा-पूरा बदला पाएगा।

उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि चार या पाँच लोगों के पास एक ही तेल का दीया है। एक व्यक्ति तेल लाता है, दूसरा बाती, तीसरा मंथली, तीसरा माचिस; वे दीया जलाते हैं। उनमें से प्रत्येक का दीया अपना है। यदि प्रत्येक के पास दीवार पर दर्पण है, तो उसके पास अपने साझा कमरे में शामिल एक अलग, परावर्तित कमरा और उसमें परावर्तित एक अलग दीपक दोनों होंगे।

इसी प्रकार, जैसा कि सत्य के लोगों द्वारा स्वीकार किया गया है और ईश्वरीय दया और उदारता की व्यापकता की आवश्यकता है, परलोक के लिए खर्च की जाने वाली संपत्ति में ईमानदारी से भागीदारी करने से उत्पन्न होने वाला संपूर्ण पुरस्कार और प्रकाश, तथा भाईचारे और बहनचारे की एकजुटता और सहयोग, तथा पूर्ण एकता में संयुक्त उद्यम, प्रत्येक भागीदार के खाते में जोड़ा जाएगा।

इसलिए, हे मेरे भाईयों और बहनों! मुझे उम्मीद है कि ईश्वर आपको भौतिक लाभों में प्रतिस्पर्धा से बचाएगा। हालाँकि, यह संभव है कि सूफी मार्ग के कुछ अनुयायियों की तरह, आप परलोक से संबंधित लाभों के संबंध में धोखा खा सकते हैं। लेकिन आपको यह समझना चाहिए कि कुछ व्यक्तिगत, छोटे इनाम की तुलना कभी भी उस इनाम और रोशनी से नहीं की जा सकती है जो एक समूह द्वारा किए गए अच्छे कर्मों से मिलती है जो एक दूसरे का समर्थन करते हैं, जैसा कि ऊपर के उदाहरण में है।

दूसरा उदाहरण: अपने काम से अच्छे परिणाम या उत्पाद प्राप्त करने के लिए, कारीगर अपने कौशल को एक साथ जोड़ते हैं।

और श्रम करके बहुत धन प्राप्त करें। ऐसा कहा जाता है कि एक बार दस लोगों ने सुइयाँ बनाने की कोशिश की, प्रत्येक ने अपने-अपने तरीके से काम किया। अपने व्यक्तिगत श्रम के परिणामस्वरूप, प्रत्येक व्यक्ति प्रतिदिन तीन सुइयाँ बनाने में सक्षम था। फिर, संयुक्त उद्यम के सिद्धांत को अपनाते हुए, वे एक साथ आए, एक लोहा लाया, दूसरा भट्टी जलाया, तीसरा सुइयों को छेदा, तीसरा उन्हें भट्टी में रखा, तीसरा उनकी नोक को तेज किया, और इसी तरह। प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने काम के हिस्से को पूरा करने में व्यस्त था, बिना समय बर्बाद किए और सुई बनाने की कला में एक विशिष्ट कौशल भी हासिल किया। फिर उन्होंने अपने संयुक्त उद्यमों और श्रम के विभाजन के परिणाम को आपस में साझा किया। उन्होंने देखा कि तीन के बजाय, प्रत्येक व्यक्ति के पास प्रतिदिन तीन सौ सुइयाँ थीं। इस घटना को कारीगरों के बीच व्यापक रूप से प्रसारित किया गया ताकि उन्हें अपने प्रयासों में शामिल होने के लिए प्रेरित किया जा सके।

तो हे मेरे भाईयों और बहनों! अगर सांसारिक मामलों में एकता और सहमति से इतने बढ़िया नतीजे मिलते हैं, तो आप इसे इस बात से जोड़कर देख सकते हैं कि परलोक से जुड़े कामों में मिलकर प्रयास करना कितना लाभदायक होगा, जिसका फल बंटा नहीं होता और ईश्वरीय कृपा से हर भागीदार को पूरा-पूरा मिलता है। इस बड़े लाभ को प्रतिद्वंद्विता और कपट के कारण नहीं खोना चाहिए।

दूसरी बात जो ईमानदारी को नष्ट करती है, वह है अहंकार की चापलूसी करना और प्रसिद्धि, यश या स्थिति के नाम पर सार्वजनिक ध्यान और स्वीकृति प्राप्त करके बुराई करने वाली आत्मा को ऊंचा स्थान देना।

लोगों की आँखों में धूल झोंकना। यह आध्यात्मिक रोगों में सबसे खतरनाक है, जो दिखावे और आत्म-केंद्रितता की ओर ले जाता है, जिसे ईश्वर के साथ भागीदारों का एक छिपा हुआ संबंध माना जाता है।

हे मेरे भाइयो और बहनो! हम जिस मार्ग पर चलने की कोशिश करते हैं, वह पवित्र कुरान की सेवा में सत्य पर आधारित है और इसके लिए सच्चे भाईचारे की आवश्यकता है। भाईचारे के लिए भाई-बहनों के बीच आत्म-विनाश और उन्हें खुद से बेहतर मानना आवश्यक है।[11] इसलिए, हमारे बीच ऐसी प्रतिद्वंद्विता नहीं होनी चाहिए जो लोगों की नज़र में हैसियत की चाहत से पैदा होती है। यह हमारे मार्ग के बिलकुल विपरीत है। चूँकि हर व्यक्ति सभी भाई-बहनों के संपूर्ण सम्मान का आनंद ले सकता है, इसलिए मैं आशा करता हूँ कि रिसाले-ए-नूर के छात्र व्यक्तिगत, स्वार्थी, प्रतिस्पर्धी और मामूली प्रसिद्धि और यश के लिए उस महान सामूहिक सम्मान का त्याग करने से दूर रहेंगे। उन्हें इतना समझदार और आध्यात्मिक रूप से परिपक्व होना चाहिए कि वे ऐसी नीच, हानिकारक चीज़ों पर न गिरें। लेकिन हर किसी की आत्मा में एक बुराई करने वाली आत्मा होती है, और कभी-कभी स्वार्थी आवेग और इच्छाएँ किसी व्यक्ति को उसके दिल, दिमाग और आत्मा के बावजूद इस हद तक नियंत्रित कर सकती हैं। मैं कभी भी आपके दिल, दिमाग या आत्मा पर आरोप लगाने के बारे में नहीं सोचता। लेकिन शारीरिक आत्मा, आवेग, इच्छाएँ और कल्पनाएँ कभी-कभी धोखा देती हैं। इस कारण से, आपको कभी-कभी कड़ी चेतावनी दी जाती है।

---

[11] धन्य है वह व्यक्ति जो कुरान के स्वर्गीय झरने से बहते मीठे जल का एक बड़ा कुंड पाने के लिए अपने अहंकार को, जो बर्फ के एक टुकड़े के समान है, उस कुंड में डाल देता है और उसे पिघला देता है।

चेतावनियों में गंभीरता इन आवेगों, इच्छाओं और कल्पनाओं के कारण है। इसलिए, सावधानी से काम करें।

अगर हमारा रास्ता किसी शेख के अधीन होने पर आधारित होता तो एक ही पद होता या सीमित संख्या में निम्न पद होते। इन पदों के लिए कई योग्यताएँ उम्मीदवार होतीं और इससे ईर्ष्या और स्वार्थ की भावना पैदा होती।

लेकिन हमारा मार्ग भाईचारे पर आधारित है। कोई भी भाई या बहन किसी दूसरे का माता-पिता नहीं हो सकता या आध्यात्मिक मार्गदर्शक का पद नहीं ले सकता। भाईचारे में कई तरह के पद शामिल होते हैं और इसमें किसी तरह की प्रतिद्वंद्विता या प्रतिस्पर्धा की अनुमति नहीं होती। भाई और बहन एक दूसरे के सहायक और समर्थक होते हैं, प्रत्येक एक दूसरे की सेवा पूरी करते हैं। यह दर्शाता है कि व्यक्तिगत पुरस्कार के लिए लालच को पोषित करना कितना हानिकारक होगा; पिता के पद या आध्यात्मिक मार्गदर्शक के आधार पर व्यक्तिगत पुरस्कार के लिए प्रतिस्पर्धा करना, चाहे उनके पास कितनी भी व्यक्तिगत उत्कृष्टता या आध्यात्मिक उपलब्धियाँ क्यों न हों, कुछ सूफी मार्गों के अनुयायियों को आपस में प्रतिद्वंद्विता और असहमति से बहुत पीड़ित करता है। उनकी विशाल, पवित्र शक्ति विधर्म की आंधी का सामना नहीं कर सकती।

ईमानदारी प्राप्त करने में तीसरी बाधा भय और लोभ है। आपको छह मानवीय और शैतानी षड्यंत्रों (पत्रों में उनतीसवें पत्र का चौथा भाग) का संदर्भ देते हुए , जहाँ इस बाधा को कुछ अन्य के साथ-साथ समझाया गया है, मैं उसके सभी सुन्दर नामों को उसके साथ हमारा मध्यस्थ बनाता हूँ, और

दयालुओं में भी परम दयालु से प्रार्थना करें कि वह हमें पूर्ण ईमानदारी प्राप्त करने में सक्षम बनाए।

> हे ईश्वर! सूरतुल इखलास (ईमानदारी का कुरानिक अध्याय) के लिए, हमें अपने ईमानदार और ईमानदारी से संपन्न दासों में शामिल करें। आमीन। आमीन।

> तू पवित्र है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु वही जो तूने हमें सिखाया है। निस्संदेह तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

मेरे कुछ भाइयों को एक गोपनीय पत्र

मैं अपने उन भाइयों को दो हदीसों का एक पहलू बताना चाहूँगा जो कुरान और ईमान की खिदमत करने से ऊब चुके हैं और रिसाले-ए-नूर के कई हिस्सों को लिखकर और उनकी कई प्रतियां बनाकर अनिच्छुक हैं, और इन तीन महीनों में इबादत के कुछ खास कामों को प्राथमिकता देते हैं, यानी र-जब, शाबान और रमज़ान, जो कि इबादत पर दूसरे समयों से ज़्यादा ध्यान देने के महीने हैं। कुरान और ईमान की खिदमत करना दरअसल पाँच तरह की इबादत है।12

---

12 हमने अपने शिक्षक से इन पाँच बातों के बारे में पूछा। हमें जो उत्तर मिला वह इस प्रकार है:

• ऐसे प्रयास गुमराह और विधर्मी लोगों के खिलाफ कुरान और विश्वास की रक्षा करने का प्रयास करते हैं, जो वर्तमान में सबसे महत्वपूर्ण जिह्द है।

• वे विश्वास की सच्चाइयों को संप्रेषित करने में हमारी शिक्षक की सहायता करके उनकी सेवा करते हैं।

• वे मुसलमानों की आस्था के आधार पर सेवा करते हैं।
• वे लेखन के माध्यम से धार्मिक शिक्षा और ज्ञान प्रदान करते हैं।
• वे चिंतन के रूप में एक घंटे की पूजा सुनिश्चित करते हैं

पहली हदीस है, “(अंतिम निर्णय में) धर्म के सच्चे विद्वानों द्वारा खर्च की गई स्याही शहीदों के खून के वजन के बराबर है।”13

दूसरी हदीस है, "जो कोई मेरी सुन्नत का पालन करेगा, जबकि मेरी कौम भ्रष्ट हो जाएगी, उसके लिए सौ शहीदों का सवाब है।"14

ऐ भाईयों और बहनों, जो ऊब और अनिच्छा दिखाते हैं। ये दोनों हदीसें मिलकर दिखाती हैं कि काली रोशनी की एक बूँद - स्याही, जो जीवन के पानी की तरह है - जो विश्वास की सच्चाइयों, इस्लामी जीवन के मूल तत्वों और पैगंबर की उच्च सुन्नत की सेवा करने वाले धन्य कलमों से निकलती है - उन पर शांति और आशीर्वाद हो, इस समय न्याय के दिन आपके लिए शहीदों के खून की सौ बूंदों के बराबर काम आ सकती है। इसलिए, इसे हासिल करने की कोशिश करो!

यदि आप कहें कि हदीस में विद्वानों का उल्लेख है, लेकिन हममें से कुछ लोग केवल लेखक हैं।

उत्तर: जो व्यक्ति इन ग्रंथों को एक वर्ष तक ध्यानपूर्वक पढ़कर उन्हें पूर्णतः समझ लेता है, वह इस समय का महत्वपूर्ण, प्रख्यात विद्वान हो सकता है। भले ही वे इन्हें पूर्णतः न समझ पाएं, रिसाले -ए-इस्लाम के विद्यार्थी इन ग्रंथों को पूर्णतः समझ नहीं पाते।

जो कभी-कभी एक वर्ष की अतिरिक्त पूजा के बराबर हो सकती है।
हस्ताक्षरित: रुस्दु, हुसरेव, राफेट

13 अल-ग़ज़ाली, इहयाउ 'उलूम एड-दीन, 1:6, 8; इब्न हजर अल-अस्कलानी, लिसान अल-मिज़ान, 5:225; अल-मुनावी, फ़ायद अल-कादिर, 6:466. (ट्र.)

14 अत-तबरानी, अल-मुजम अल-अव्सत, 5:315; अल-बहाकी, सुनान, "ज़ुहद" 118. (ट्र.)

नूर का एक सामूहिक व्यक्तित्व है और यह निश्चित रूप से इस समय का विद्वान है। आपकी कलम उस सामूहिक व्यक्तित्व की उंगलियाँ हैं। हालाँकि, मेरे विचार से, मैं ऐसा समझे जाने का हकदार नहीं हूँ, लेकिन मेरे बारे में आपकी अच्छी राय के कारण आपने मुझे अपना शिक्षक और एक धार्मिक विद्वान माना है। चूँकि मुझे लिखने में कठिनाई होती है, इसलिए आपकी कलम को मेरा माना जा सकता है, और आपको हदीस में वर्णित सवाब मिलेगा।

नर्सी ने कहा

इस्लामिक ब्रदरहुड और सिस्टरहुड

[पत्रों से, बाईसवाँ पत्र]

उसके नाम पर.

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

(इस पत्र में दो अध्याय हैं। पहला अध्याय विश्वासियों को भाईचारे [और बहनचारे] और आपसी प्रेम का आह्वान करता है।)

पहला अध्याय

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

ईमानवाले तो आपस में भाई-भाई हैं, अतः तुम अपने भाइयों के बीच सुलह करा दो। (49:10)

बुराई को उसी तरह दूर करो जो अच्छा हो, फिर देखो कि जिसके साथ तुम्हारे बीच दुश्मनी थी, वही तुम्हारा घनिष्ठ मित्र बन गया है। (41:34)

वे सदैव अपने क्रोध पर नियंत्रण रखते हैं और लोगों को क्षमा करते हैं। अल्लाह भलाई करने वाले लोगों से प्रेम करता है। (3:134)

विवाद, मतभेद, पक्षपात, हठ और ईर्ष्या, जो मोमिनों के बीच विद्वेष और दुश्मनी पैदा करते हैं, व्यक्तिगत, सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन के लिए और सत्य, ज्ञान और इस्लाम के दृष्टिकोण से, जो सर्वोच्च मानवता है, अरुचिकर, नीच, हानिकारक और अनुचित हैं।

इसके अलावा, वे मानव जीवन को विषाक्त करते हैं। इस सत्य के अनेक पहलुओं में से, हम केवल छह का ही उल्लेख करते हैं।

पहला पहलू: सत्य की दृष्टि से वे ग़लत हैं।

ऐ अन्यायी, जो किसी मोमिन के लिए द्वेष और दुश्मनी पालता है, कल्पना कर कि तू एक जहाज़ या घर में है, जिसमें एक अपराधी और नौ बेगुनाह लोग हैं। अगर कोई जहाज़ डुबाने की कोशिश करे या घर में आग लगाए (उस एक अपराधी की वजह से), तो तू ऐसे अन्याय की भयावहता को समझ जाएगा और उसके अन्याय का जितना हो सके उतना विरोध करेगा और निंदा करेगा। अगर उस जहाज़ पर एक बेगुनाह और नौ अपराधी भी हों, तो भी उसे डुबाना अन्याय होगा।

एक आस्तिक की तुलना ईश्वर के स्वामित्व वाले घर या जहाज से की जा सकती है। ऐसे व्यक्ति में नौ नहीं, बल्कि बीस से ज़्यादा मासूम गुण होते हैं जैसे कि ईमान, इस्लाम और पड़ोसीपन। अगर आप किसी एक आपराधिक गुण के कारण उसके प्रति द्वेष और दुश्मनी रखते हैं, जो आपको पसंद नहीं है, यानी उस जहाज या घर के विनाश की इच्छा रखते हैं, तो आपका अपराध सबसे जघन्य होगा।

दूसरा पहलू: बुद्धि की दृष्टि से ये गलत हैं। प्रेम और शत्रुता विपरीत हैं, जैसे

प्रकाश और अंधकार, और इसलिए उनका वास्तविक स्वरूप एक ही हृदय में नहीं मिल सकता। यदि किसी हृदय में प्रेम वास्तव में उन कारणों की प्रधानता के कारण महसूस किया जाता है जो इसे उत्पन्न करते हैं, तो शत्रुता दया का रूप ले लेती है। विश्वासियों को अपने विश्वास में भाइयों और बहनों से प्रेम करना चाहिए - और वास्तव में प्रेम करते हैं - और उनमें देखी गई किसी भी बुराई से दुखी होना चाहिए।

उन्हें केवल नम्रता से ही उन्हें सुधारने में मदद करने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि एक पैगम्बरीय परंपरा में कहा गया है, "ईमान वालों को एक दूसरे पर गुस्सा नहीं करना चाहिए, और न ही तीन दिनों से अधिक समय तक एक दूसरे से बात करने से इनकार करना चाहिए।"15 यदि दुश्मनी पैदा करने वाले कारण प्रबल हो जाते हैं और दुश्मनी दिल पर आक्रमण करती है, तो प्यार केवल औपचारिक हो जाता है और दिखावा और चापलूसी से अधिक कुछ नहीं होता है।

ऐ अन्यायी लोगों, देखो कि एक मोमिन भाई के साथ कितना बड़ा अन्याय और दुश्मनी है! अगर तुम बेकार के कंकड़ों को काबा से ज़्यादा कीमती और उहुद पर्वत से बड़ा समझते हो, तो तुम एक घिनौनी मूर्खता के दोषी हो। चूँकि सभी इस्लामी विशेषताएँ जैसे ईमान (काबा जितना कीमती) और इस्लाम (उहुद पर्वत जितना शानदार) मोमिनों के बीच प्यार और सौहार्द की माँग करते हैं, इसलिए ईमान और इस्लाम को कुछ कमियों और कमियों की तुलना में कम महत्व देना एक बहुत बड़ी शर्म, मूर्खता और अन्याय है जो मोमिन के प्रति दुश्मनी पैदा करती हैं लेकिन वास्तव में उहुद पर्वत या काबा की तुलना में बेकार के कंकड़ों की तरह हैं।

विश्वास में एकता के लिए दिलों की एकता, तथा पंथ और कार्य के समान सिद्धांतों का पालन करने में एकता की आवश्यकता होती है

15 बुखारी, अदब, 57; मुस्लिम, बीर, 23; अबू दाऊद, अदब, 47. (ट्र.)

सामाजिक सहमति और एकजुटता की मांग करता है। यदि आप किसी और के साथ एक ही स्क्वाड्रन में हैं, तो आप उसके प्रति मित्रतापूर्ण महसूस करेंगे और इसलिए एक पारस्परिक रूप से मैत्रीपूर्ण संबंध बनाएंगे क्योंकि आप एक कमांडर द्वारा कमांड किए जाते हैं। आप एक ही शहर से होने या रहने के कारण दूसरे के साथ भाईचारे का रिश्ता भी अनुभव करेंगे। इसे देखते हुए, एकता के बंधन, समझौते के बंधन और विश्वास के प्रकाश और चेतना द्वारा उत्पन्न भाईचारे के रिश्ते उतने ही हैं जितने दिव्य नाम हैं जो विश्वास आपको प्रकट करता है।

उदाहरण के लिए:

तुम दोनों एक ही रचयिता, प्रभु, पूज्य, प्रदाता की सेवा करते हो... इसलिए तुम्हारे बीच उतने ही संबंध हैं जितने ईश्वरीय नाम हैं। तुम्हारा नबी, तुम्हारा धर्म और तुम्हारा क़िबला एक ही हैं, और ऐसे संबंधों की संख्या लगभग सौ है।

आपका शहर, देश और राज्य एक है, और आपके लिए दसियों चीजें एक समान हैं।

इन संबंधों के लिए एकता और एकरूपता, मिलन और सामंजस्य, प्रेम और भाईचारे की आवश्यकता होती है। ऐसी अमूर्त जंजीरें सभी ग्रहों को एक साथ जोड़ने के लिए पर्याप्त मजबूत हैं। यदि, इन सबके बावजूद, आप मकड़ी के जाले जैसी कमजोर और तुच्छ चीजों को पसंद करते हैं और जो विवाद, कलह और विद्वेष का कारण बनती हैं, और साथी विश्वासियों के प्रति शत्रुता और द्वेष रखते हैं, तो आपको समझना चाहिए - जब तक कि आपका दिल मर न जाए और आपकी बुद्धि बुझ न जाए - एकता के उन संबंधों के प्रति आपकी कितनी बड़ी उपेक्षा है, और कितनी गंभीर है-

आप हमेशा प्रेम के उन कारणों का अपमान कर रहे हैं और उन भाईचारे के रिश्तों का उल्लंघन कर रहे हैं!

तीसरा पहलू: कोई भी आत्मा किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाती और न ही उसे उठाना पड़ता है (6:164), जो कि पूर्ण न्याय को दर्शाता है, ईमान वालों के लिए विद्वेष और दुश्मनी पालना ऐसा है जैसे कि एक अपराध के कारण उनके सभी निर्दोष गुणों को दोषी ठहराया जाए - वास्तव में यह बहुत बड़ा अन्याय है! यदि आप अपनी दुश्मनी उनके रिश्तेदारों तक बढ़ाते हैं, तो आप इस आयत के पात्र हैं लोग बहुत ज़्यादा अन्यायी हैं (14:34)। चूँकि सत्य और इस्लाम का कानून और ज्ञान आपको इस तरह के बड़े अन्याय से आगाह करता है, तो आप खुद को कैसे सही मान सकते हैं?

सत्य के अनुसार, शत्रुता उत्पन्न करने वाली बुराई के रूप स्वयं बुरे हैं, तथा वे पृथ्वी के समान सघन हैं। उन्हें दूसरों को संक्रमित नहीं करना चाहिए या दूसरों तक नहीं पहुँचाना चाहिए।

लेकिन अगर दूसरे लोग उन्हें देखते हैं जो ऐसा करते हैं और उनकी नकल करते हैं

उनके लिए, यह पूरी तरह से एक अलग मामला बन जाता है। [क्योंकि ऐसे लोग उन बुराइयों की प्रभावी शक्तियों की तुलना में ऐसी बुराइयों की ओर अपने स्वयं के झुकाव से ऐसा करते हैं।] इसके विपरीत, अच्छे कार्य और गुण जो प्रेम को जन्म देते हैं, वे प्रेम की तरह ही चमकदार होते हैं, और स्वभाव से ही संचारणीय होते हैं। यही कारण है कि हमारे पास ऐसी कहावतें हैं, जैसे, "मित्र का मित्र मित्र होता है" और "एक आँख के लिए कई आँखों से प्यार किया जाता है।"

अतः ऐ अन्यायियों! विचार करो कि निर्दोष साथी विश्वासियों के प्रति, जो प्रेम के योग्य हैं, शत्रुता रखना कितना बड़ा अपराध है, या उनके रिश्तेदारों के प्रति, क्योंकि तुम व्यक्तिगत विश्वासियों को पसंद नहीं करते।

चौथा पहलू: यह व्यक्तिगत जीवन के दृष्टिकोण से गलत है। इस पहलू के आधार पर निम्नलिखित चार सिद्धांतों पर विचार करें:

पहला सिद्धांत: जब आप जानते हैं कि आपका मार्ग सही है और आपकी राय सत्य है, तो आप यह कहने में न्यायसंगत हो सकते हैं कि, "मेरा मार्ग सही और बेहतर है।" लेकिन आप यह नहीं कह सकते कि, "केवल मेरा मार्ग ही सही है।" सिद्धांत के अनुसार, "संतुष्टि की आँख दोषों को देखने के लिए बहुत मंद होती है, जबकि क्रोध की आँख सभी बुराइयों को प्रदर्शित करती है," आपका अन्यायपूर्ण दृष्टिकोण और विकृत राय मार्गों के बीच न्याय नहीं कर सकती है, और आपको किसी दूसरे के मार्ग को गलत नहीं मानना चाहिए।

दूसरा सिद्धांत: आप जो भी कहें वह सच होना चाहिए, लेकिन आपको यह अधिकार नहीं है कि आप (लापरवाही से और हर मौके पर) जो भी सच है उसे कहें। जो लोग आपके जैसे ईमानदार नहीं हैं, वे आपकी सलाह से चिढ़ सकते हैं और प्रतिकूल प्रतिक्रिया दे सकते हैं।

तीसरा सिद्धांत: अगर आप अपनी दुश्मनी को बढ़ाना चाहते हैं, तो इसे अपने दिल में मौजूद दुश्मनी के खिलाफ़ निर्देशित करें और इसे दूर करने की कोशिश करें। साथ ही, अपनी दुष्ट आत्मा और उसकी कल्पनाओं के दुश्मन बनें और उसे सुधारने की कोशिश करें, क्योंकि यह आपका सबसे ख़तरनाक दुश्मन है। उस हानिकारक आत्मा को खुश करने के लिए विश्वासियों के प्रति क्रोध और दुश्मनी न पालें। अगर आप इस दुश्मनी को दूर नहीं कर सकते, तो कई अविश्वासी और विधर्मी दुश्मनी के हकदार हैं। जैसे प्यार का गुण प्यार पाने का हकदार है, वैसे ही दुश्मनी भी दुश्मनी पाने की हकदार है।

अगर आप अपने दुश्मन को हराना चाहते हैं तो बुराई का जवाब अच्छाई से दीजिए, क्योंकि बुराई से जवाब देने से दुश्मनी बढ़ती है। भले ही वे बाहरी तौर पर पराजित हों, लेकिन ऐसे लोग अपने दिल में द्वेष और दुश्मनी पालते हैं। आस्तिक स्वभाव से महान होते हैं और इसलिए अगर आप उनके साथ अच्छा व्यवहार नहीं करेंगे तो वे आपके सामने झुक जाएंगे। भले ही एक आस्तिक नीच लगे, लेकिन वह विश्वास के मामले में महान है। अगर आप अच्छाई से जवाब देंगे, तो वे पश्चाताप करेंगे और आपके मित्र बन जाएंगे, जैसा कि दोहे में व्यक्त किया गया है:

> यदि आप महान लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करेंगे, तो वे आपके होंगे,
>
> लेकिन यदि आप नीच लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करेंगे तो वे विद्रोह कर देंगे।

अगर आप किसी को बार-बार यह कहते हैं कि वह अच्छा है या बुरा, तो अक्सर देखा जाता है कि वह खुद ही अच्छा या बुरा बन जाता है। इसलिए कुरान द्वारा स्थापित निम्नलिखित पवित्र सिद्धांतों पर ध्यान दें, क्योंकि इसमें खुशी और मुक्ति पाई जाती है:

> जब वे किसी व्यर्थ और बेकार चीज़ के पास से गुज़रते हैं, तो उससे शान से गुज़र जाते हैं। (25:72)
>
> फिर भी यदि तुम क्षमा करो, सहन करो और क्षमा करो तो अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है। (64:14)

चौथा सिद्धांत: जो लोग द्वेष और शत्रुता में लिप्त होते हैं, वे अपनी आत्मा, साथी विश्वासियों और ईश्वरीय करुणा का उल्लंघन करते हैं। क्योंकि जब भी वे अपने शत्रुओं को आशीर्वाद या लाभ प्राप्त करते देखते हैं, तो वे अपनी आत्मा को पीड़ा पहुँचाते हैं और अपने शत्रुओं से डरने के कारण पीड़ा सहते हैं। ईर्ष्या से उत्पन्न शत्रुता

सबसे गंभीर यातना, क्योंकि ईर्ष्या ईर्ष्या करने वाले को खा जाती है और नष्ट कर देती है, जबकि ईर्ष्या करने वाले को अछूता या काफी हद तक अछूता छोड़ देती है।

अगर ऐसी ईर्ष्या में फंसे लोग ठीक होना चाहते हैं, तो उन्हें सोचना चाहिए कि ऐसी ईर्ष्या को कौन या किस तरह से जन्म देता है। ऐसा करने से उन्हें पता चलेगा कि उनके दुश्मनों के पास जो शारीरिक सुंदरता और ताकत, और सांसारिक पद और धन है, वह क्षणिक है। उनका लाभ थोड़ा है, लेकिन वे जो परेशानी पैदा करते हैं वह बहुत बड़ी है। अगर तुम दूसरों से उनकी आख़िरत के संबंध में की गई खूबियों के कारण ईर्ष्या करते हो, तो या तो तुम एक पाखंडी हो जो आख़िरत में मिलने वाले पुरस्कारों को यहीं खर्च करना चाहता है, या फिर तुम अपनी ईर्ष्या के लक्ष्य को पाखंडी या दिखावटी समझते हो।

यदि आप उन लोगों पर प्रसन्न होते हैं जिनसे आप ईर्ष्या करते हैं और जब उन्हें कोई उपहार मिलता है तो दुखी होते हैं, तो आप भाग्य और ईश्वरीय करुणा द्वारा उनके साथ किए गए अच्छे कार्यों से नाराज होते हैं और इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से उनकी आलोचना करते हैं और उन पर आपत्ति करते हैं। जो लोग भाग्य की आलोचना करते हैं वे निहाई पर अपना सिर मारते हैं और तोड़ते हैं; जो लोग करुणा पर आपत्ति करते हैं वे उससे वंचित हो जाते हैं।

न्याय और विवेक कैसे स्वीकार कर सकते हैं कि आप एक दिन की शत्रुता के योग्य भी नहीं किसी चीज़ को एक साल तक विद्वेष और शत्रुता का कारण बना दें? इसके अलावा, आप अपने द्वारा किसी साथी विश्वासी के हाथों सहे गए किसी भी बुरे काम के लिए सिर्फ़ तीन कारणों से उसे ज़िम्मेदार नहीं ठहरा सकते:

इसे अनुमति देने में भाग्य की भूमिका है, इसलिए इसे चुपचाप स्वीकार करें;

शैतान और दुष्टता का आदेश देने वाली आत्मा के हिस्से पर विचार करें, जो आपको दया का कारण बनेगा - और नाराजगी का नहीं -
तुम्हारे साथी विश्वासी जो उनसे पराजित हुए थे; और ईश्वर ऐसे लोगों का उपयोग करके तुम्हें उस दोष के लिए दण्ड दे सकता है जिसे तुम देखना नहीं चाहते या जिसे तुम गुप्त रखते हो।

शेष बचे छोटे हिस्से का जवाब सहिष्णुता, क्षमा और उदारता से देकर, आप अपने शत्रु पर शीघ्रता से और सुरक्षित रूप से विजय प्राप्त कर लेंगे, और किसी भी गलत काम और नुकसान से बचेंगे। अन्यथा, आप एक शराबी या पागल व्यापारी की तरह होंगे जो हीरे की कीमत पर बर्फ और कांच के टुकड़े खरीदता है। दूसरे शब्दों में, आप बेकार, क्षणिक और महत्वहीन मामलों का जवाब हिंसक, लगातार शत्रुता और स्थायी विद्वेष के साथ देंगे, जैसे कि आप और आपका शत्रु हमेशा के लिए इस दुनिया में रहेंगे। ऐसा रवैया इस ओर ले जाता है

अत्यधिक गलत काम, नशे की हालत [वास्तविकता से अनभिज्ञ होने के अर्थ में], और एक प्रकार का पागलपन।

अगर तुम अपने बारे में परवाह करते हो, तो दुश्मनी और बदला लेने की इच्छा को अपने दिल में मत आने दो, जो तुम्हारे जीवन के लिए बहुत हानिकारक हैं। अगर वे पहले से ही तुम्हारे दिल में हैं, तो उन पर ध्यान मत दो; इसके बजाय, हाफ़िज़ अश-शिराज़ी के शब्दों पर ध्यान दो: "दुनिया कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसके लिए संघर्ष किया जाए।" दुनिया बेकार है क्योंकि यह क्षणभंगुर है। इसे देखते हुए, समझो कि इसके छोटे-मोटे मामले कितने महत्वहीन हैं! हाफ़िज़ यह भी कहते हैं:

> दोनों दुनियाओं की शांति दो चीजों में निहित है:
> मित्रों के प्रति उदारता और शत्रुओं का बुद्धिमानी से प्रबंधन।

यदि आप कहते हैं, "लेकिन मेरे पास कोई विकल्प नहीं है, क्योंकि शत्रुता मेरे स्वभाव का हिस्सा है। इसके अलावा, इन बातों ने मुझे क्रोधित किया और इसलिए मैं उन्हें अनदेखा नहीं कर सकता," तो मैं जवाब देता हूँ, "यदि आप बुरा व्यवहार नहीं करते हैं, जैसे कि चुगली करना, या उन लोगों के प्रति ऐसे आवेगों के प्रभाव में जिनके लिए आप शत्रुता रखते हैं, और यदि आप जानते हैं कि आप गलती कर रहे हैं, तो यह नुकसानदेह नहीं है। अपनी गलती के बारे में जागरूकता और यह स्वीकार करना कि आपका बुरा आवेग गलत है, इसका मतलब है पश्चाताप करना और ईश्वर से क्षमा मांगना, जो आपको इसके बुरे परिणामों से बचाएगा। यही कारण है कि मैंने यह खंड लिखा है-

ताकि तुम क्षमा मांग सको, सही गलत में भेद कर सको, और अपने दुश्मन को जो सही है, गलत न समझो।”

एक मामला ध्यान देने योग्य है: मैंने एक बार इस्लाम के एक पक्षपाती लेकिन धार्मिक विद्वान को एक अलग राजनीतिक राय रखने वाले दूसरे धार्मिक विद्वान की निंदा करते हुए देखा, यह कहते हुए कि वह एक धर्मत्यागी है, और फिर अपने ही विचार रखने वाले एक साथी पक्षपाती पाखंडी की सम्मानपूर्वक प्रशंसा की। इस तरह के बुरे परिणाम से स्तब्ध होकर, मैंने कहा, "मैं शैतान और राजनीति से ईश्वर की शरण में जाता हूँ," मैंने राजनीतिक जीवन से खुद को अलग कर लिया।

पांचवां पहलू: हठ और पक्षपात से सामाजिक जीवन को ही हानि होती है।

अगर यह कहा जाए: एक परंपरा कहती है, "मेरे समुदाय के बीच मतभेद एक दया है।"16 मतभेद के लिए भागीदारी की आवश्यकता होती है। हालांकि यह एक बीमारी है, लेकिन यह बीमारी से भी छुटकारा दिलाती है।

16 अल-मुनावी, फ़यद अल-कादिर, 1:210।

दमनकारी अभिजात वर्ग से दबा हुआ जनसमूह, जो एकजुट होने पर अत्याचार की ओर अग्रसर होता है। यदि [राजनीतिक] दल और पक्षपात हैं, तो उत्पीड़ित लोग उनमें से किसी एक में शामिल होकर खुद को बचा सकते हैं। साथ ही, विचारों का टकराव और विचारों की असहमति सत्य को पूरी तरह से सामने आने देती है।

उत्तर: हदीस में जो अंतर बताया गया है वह यह है:

सकारात्मक अंतर। यानी, यह प्रत्येक पक्ष को अपने तर्क को बढ़ावा देने और प्रचारित करने, प्रतिस्पर्धी दृष्टिकोण को नष्ट करने के बजाय उसे सुधारने और सुधारने की अनुमति देता है।

पैगम्बर नकारात्मक मतभेद को अस्वीकार करते हैं, क्योंकि यह पक्षपातपूर्ण पूर्वाग्रह और शत्रुता के कारण दूसरे पक्ष को नष्ट करने का प्रयास करता है। जो लोग एक-दूसरे के गले पर सवार हैं, वे सकारात्मक रूप से (एक-दूसरे के प्रति) कार्य नहीं कर सकते।

जहाँ तक प्रश्न के दूसरे भाग का प्रश्न है, यदि पक्षपात सत्य के नाम पर है, तो यह अपने अधिकारों की मांग करने वालों के लिए शरणस्थली हो सकती है। लेकिन वर्तमान पक्षपातपूर्ण और आत्म-केंद्रित पक्षपात केवल अन्यायियों के लिए शरणस्थली और समर्थन का केंद्र है। यदि शैतान पक्षपातपूर्ण पक्षपात में लगे लोगों का समर्थन करता हुआ दिखाई देता है, तो ऐसे पक्षपाती लोग उस पर ईश्वर का आशीर्वाद माँगेंगे। इसके अलावा, यदि देवदूत लोग किसी अन्य पक्ष में शामिल होते हैं, तो वही पक्षपाती लोग उन पर ईश्वर का श्राप माँगेंगे।

जहाँ तक प्रश्न के तीसरे भाग का प्रश्न है, यदि लोग सत्य के नाम पर तर्क करते हैं, तो यह केवल साधनों का अंतर है।

वास्तव में, यह विषय और मूल उद्देश्य के आधार पर एक समझौता है। इस तरह के तर्क को फिर से प्रस्तुत किया जा सकता है।

सत्य के सभी पहलुओं को समझें, और इस प्रकार न्याय और सत्य की सेवा करें।
लेकिन अहंकार और प्रसिद्धि की चाहत से प्रेरित पक्षपातपूर्ण, पक्षपातपूर्ण विचारों के बीच टकराव, एक अत्याचारी, शारीरिक आत्मा द्वारा उत्पन्न, केवल मतभेद की लपटों को ही जन्म दे सकता है। किसी उद्देश्य पर सहमत न होने पर, इस तरह के विरोधी विचार पृथ्वी पर कहीं भी अभिसरण का बिंदु नहीं पा सकते हैं। चूँकि वे सत्य के नाम पर भिन्न नहीं होते हैं, इसलिए वे चरम सीमाओं में विभाजित हो जाते हैं और असंगत विभाजन को जन्म देते हैं।

संक्षेप में, यदि किसी का आचरण उच्च सिद्धांतों पर आधारित नहीं है, "ईश्वर के लिए प्रेम करना; ईश्वर के लिए नापसंद करना; ईश्वर के लिए न्याय करना," तो विवाद और कलह का परिणाम होगा। यदि कोई इन सिद्धांतों की अनदेखी करता है, तो न्याय करने का प्रयास अन्याय में परिणत होगा।

एक महत्वपूर्ण, शिक्षाप्रद घटना: एक बार इमाम अली ने एक युद्ध में एक काफ़िर को मार गिराया।

उसे मार डालो, अविश्वासी ने उस पर थूका। अली ने उसे छोड़ दिया।
जब काफ़िर ने पूछा कि ऐसा क्यों, तो अली ने जवाब दिया, "मैं तुम्हें भगवान के लिए मारने वाला था। लेकिन जब तुमने मुझ पर थूका तो मैं क्रोधित हो गया, और इसलिए मेरी मंशा की पवित्रता मेरी आत्मा की प्रवृत्तियों से धुंधली हो गई। इसलिए, मैंने तुम्हें नहीं मारा।" काफ़िर ने जवाब दिया, "मैंने तुम पर इसलिए थूका ताकि तुम पागल हो जाओ और मुझे तुरंत मार डालो। अगर तुम्हारा धर्म इतना शुद्ध और निस्वार्थ है, तो यह सच ही होगा।"

एक घटना ध्यान देने योग्य है: एक न्यायाधीश को सजा सुनाते समय गुस्से में देखकर उसके वरिष्ठ अधिकारी ने उसे नौकरी से निकाल दिया। अगर न्यायाधीश ने अपने फैसले पर अमल किया होता

पवित्र ईश्वरीय कानून के नाम पर यदि कोई कार्य करता तो उसे अपराधी पर दया आती और उसे दण्डित करने में न तो दया आती और न ही क्रोध। चूँकि उसके कार्य में उसकी आत्मा की प्रवृत्ति का भी कुछ अंश था, इसलिए वह इस कार्य को न्यायपूर्वक नहीं कर सकता था।

एक दुखद सामाजिक स्थिति और एक भयानक सामाजिक बीमारी जिस पर इस्लाम के दिल को रोना चाहिए: एक सामंजस्यपूर्ण सामाजिक जीवन के लिए यह आवश्यक है कि जब राष्ट्र विदेशी दुश्मनों से भिड़ता है तो आंतरिक शत्रुता को भुला दिया जाए और त्याग दिया जाए। जबकि सबसे अपरिष्कृत लोग भी इसे पहचानते हैं और इसका पालन करते हैं, लेकिन जो लोग मुस्लिम समुदाय की सेवा करने का दावा करते हैं, वे उस समय अपनी छोटी-मोटी शत्रुता को क्यों नहीं भूल पाते जब कई दुश्मन एक के बाद एक हमला करने के लिए स्थिति बना रहे होते हैं और इस तरह दुश्मनों के हमलों के लिए जमीन तैयार कर रहे होते हैं? यह इस्लाम के सामाजिक जीवन के खिलाफ निर्देशित भ्रष्टाचार, बर्बरता और विश्वासघात से कम नहीं है!

एक शिक्षाप्रद किस्सा: हसनान जनजाति के लोग

ओइन्स के दो परस्पर शत्रुतापूर्ण कबीले थे। हालाँकि दोनों पक्षों के 50 से ज़्यादा लोग मारे गए थे, लेकिन जब भी कोई दूसरा कबीला (जैसे, सिबकन या हैदरन) उन पर हमला करता था, तो वे अपनी जनजातीय दुश्मनी भूल जाते थे और तब तक एकजुट रहते थे जब तक कि दुश्मन को खदेड़ नहीं दिया जाता था।

हे आस्थावान लोगों! सौ से अधिक शत्रु “कबीले” हैं, जो संकेन्द्रित वृत्तों की एक श्रृंखला की तरह विश्वासियों के “कबीले” पर हमला करने के लिए तैयार हैं। अस-

रक्षात्मक रुख अपनाते हुए और एक-दूसरे का समर्थन करते हुए, कैसे आस्थावान लोग अपनी पक्षपातपूर्ण भागीदारी और शत्रुतापूर्ण विद्वेष पर जोर दे सकते हैं और इस तरह दुश्मन के हमले को सुविधाजनक बना सकते हैं और इस्लाम के दायरे में प्रवेश की अनुमति दे सकते हैं?

गुमराह, विधर्मी और झूठे विश्वास के लोगों से लेकर सांसारिक जीवन के उतार-चढ़ाव तक, शत्रुतापूर्ण ताकतों के सत्तर घेरे आपको लालच और घृणा से देख रहे हैं। हर एक आपको चोट पहुँचाने के तरीके खोजता है और क्रोध और घृणा के साथ आपका अध्ययन करता है। इन सबके खिलाफ़ आपका पक्का हथियार, ढाल और किला इस्लामी एकता है। इसलिए इस बात से अवगत रहें कि अपनी छोटी-मोटी दुश्मनी और दूसरे बहानों को आगे बढ़ाना और इस तरह इस्लाम के इस किले को हिलाना, विवेक और मुसलमानों के आम हितों के साथ कितना स्पष्ट रूप से विरोधाभासी है, और अपने होश में आएँ!

पैगंबरी परंपराओं में बताया गया है कि दज्जाल और सुफियान जैसे हानिकारक और भयानक लोग अंत समय में अविश्वासियों और पाखंडियों का नेतृत्व करेंगे।17 यद्यपि उनके पास केवल एक छोटी सी ताकत होगी, लेकिन वे लोगों की सांसारिक महत्वाकांक्षाओं और मतभेदों का फायदा उठाकर मानवता को अराजकता और मुस्लिम दुनिया को गुलामी में डाल देंगे।

ऐ ईमान वालो! यदि तुम ऐसी स्थिति से बचना चाहते हो तो होश में आओ। अल्लाह के गढ़ में शरण लो। ईमान वाले तो भाई-भाई हैं । (49:10)

17 दज्जाल ईसाई धर्म में "एंटी-क्राइस्ट" का इस्लामी समकक्ष है। सुफ़यान दज्जाल का एक प्रकार है। दोनों ही विश्वासियों के बीच बहुत तबाही और भ्रम पैदा करेंगे।

जो लोग आपके मतभेदों का फायदा उठाते हैं, वे आपके खिलाफ हैं। अगर आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आप अपनी जान नहीं बचा सकते या अपने अधिकारों की रक्षा नहीं कर सकते।

जब दो विजेता आपस में लड़ते हैं, तो एक बच्चा भी उन्हें हरा सकता है। यदि दो पहाड़ों को तराजू में संतुलित किया जाए, तो एक छोटा सा पत्थर भी एक को ऊपर और दूसरे को नीचे गिरा सकता है।

इसलिए, हे ईमान वालों! अपने जुनून और शत्रुतापूर्ण पक्षपात को नियंत्रित करो, अन्यथा तुम्हारी ताकत इतनी कमजोर हो जाएगी कि एक छोटी सी ताकत भी तुम्हें हरा सकती है। यदि तुम सामाजिक सद्भाव और एकजुटता के सामूहिक जीवन के लिए कोई प्रतिबद्धता रखते हो, तो "ईमान वाले एक साथ एक मजबूत इमारत की तरह हैं, जिसका एक हिस्सा दूसरे को सहारा देता है" के सिद्धांत को अपने जीवन में मार्गदर्शक सिद्धांत बनाओ![18] यह तुम्हें इस दुनिया में अपमान और अगले में दुख से बचाएगा।

छठा पहलू: शत्रुता और द्वेष आध्यात्मिक जीवन और उपासना को खराब कर देते हैं, क्योंकि वे आपकी ईमानदारी और इरादे की पवित्रता को खराब कर देते हैं - जो मोक्ष का साधन है। पक्षपाती पक्षपाती अच्छे कर्म करते हुए अपने विरोधियों पर श्रेष्ठता चाहते हैं और इसलिए वे पूरी तरह से ईश्वर के लिए काम नहीं करते। अपने समर्थकों के प्रति अपने निर्णय और व्यवहार को झुकाकर वे न्यायपूर्ण नहीं हो सकते। उनका इरादा अशुद्ध हो जाता है, और उनका न्याय अन्याय बन जाता है, जो दोनों ही उनके अच्छे कर्मों को शून्य कर देते हैं। इस पहलू पर विस्तार से चर्चा की आवश्यकता है, लेकिन हम इसे संक्षिप्त रखते हैं क्योंकि इस पर आगे चर्चा करने का यह सही स्थान नहीं है।

---

18 Bukhari, Salat, 88; Muslim, Birr, 65; Tirmidhi, Birr, 18. (Tr.)

दूसरा अध्याय

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

निस्संदेह अल्लाह ही अत्यन्त प्रदान करनेवाला, प्रभुत्वशाली, अत्यन्त दृढ़ है। (51:58)

बहुत-से प्राणी ऐसे हैं जो अपना रोज़ी लेकर नहीं चलते, परन्तु अल्लाह उन्हें भी रोज़ी देता है, और तुम्हें भी। वह सब कुछ सुनता, जानता है। (29:60)

ऐ ईमान वालो, अब तुम समझ गए हो कि दुश्मनी कितनी नुकसानदेह है। लालच एक और बड़ी बीमारी है और इस्लाम की ज़िंदगी के लिए भी उतनी ही नुकसानदेह है। यह निराशा, बीमारी, अपमान, अभाव और दुख पैदा करती है। कुछ लोगों की अपमान और दुख-तकलीफें, जो इस दुनिया में किसी और से ज़्यादा उत्सुकता से कूद पड़ते हैं, इस बात को साबित करती हैं।

लालच हर जगह अपने बुरे परिणाम दिखाता है, जहाँ भी सजीव प्राणी होते हैं। इसके विपरीत, संतोष और ईश्वर पर भरोसा करके अपनी पूर्ति की तलाश करना शांति का साधन है और हर जगह इसके अच्छे प्रभाव दिखाई देते हैं।

उदाहरण के लिए, फलों के पेड़ों और पौधों को भोजन की ज़रूरत होती है, फिर भी वे स्थिर रहते हैं, "पूरी तरह से ईश्वर पर भरोसा करते हैं और अधीरता नहीं दिखाते।" और इसलिए उनके पास भोजन की कमी नहीं है और वे जानवरों की तुलना में ज़्यादा तेज़ी से प्रजनन करते हैं। जानवरों को बहुत प्रयास के बाद भी अपर्याप्त भोजन मिलता है, क्योंकि वे अधीरता से उसका पीछा करते हैं।

जीवित प्राणियों में केवल युवा ही, जो "अपनी कमज़ोरी और नपुंसकता के माध्यम से ईश्वर पर अपना भरोसा प्रदर्शित करते हैं," ईश्वरीय करुणा के खजाने से अपने हक़ का और स्वादिष्ट भोजन पूरी तरह से प्राप्त करते हैं। दूसरी ओर, जंगली जानवर जो लालच से अपने भोजन पर झपटते हैं, वे बहुत प्रयास करके "अवैध" और घटिया भोजन प्राप्त करते हैं। ये उदाहरण दिखाते हैं कि लालच अभाव का कारण बनता है, जबकि ईश्वर पर भरोसा और संतोष ईश्वरीय दया के साधन हैं।

जो लोग लालच से इस दुनिया से चिपके रहते हैं और सांसारिक जीवन से जुनूनी रूप से जुड़े रहते हैं, वे कम लाभ के लिए सूदखोरी और इसलिए अवैध धन पर नियंत्रण हासिल करने के लिए बहुत प्रयास करते हैं। बदले में उन्हें अंतरराष्ट्रीय अपमान, दुख, मृत्यु और अपमान सहना पड़ता है। यह दर्शाता है कि लालच अपमान और हानि का स्रोत है। इसके इतने सारे उदाहरण हैं कि "लालची लोग निराशा और हानि के संपर्क में आते हैं," कहावत और सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत सत्य है। इसलिए यदि आप धन से प्रेम करते हैं, तो इसे संतोष के साथ प्राप्त करें ताकि आप इसे प्रचुर मात्रा में कमा सकें।

संतुष्ट और लालची लोगों की तुलना दो लोगों से की जा सकती है जो एक महान व्यक्ति के सभा में प्रवेश करते हैं। एक सोचता है, "यह पर्याप्त है कि वह मुझे अंदर आने दे ताकि मैं बाहर की ठंड से बच सकूँ। अगर वह मुझे सबसे निचले स्थान पर भी बैठा दे, तो यह एक एहसान होगा।" दूसरा व्यक्ति अहंकार से सबसे ऊंचे स्थान की आशा करता है, मानो उसे इस पर कुछ अधिकार है और मानो सभी को उसका सम्मान करना चाहिए।

वह लालच के साथ प्रवेश करता है और अपनी दृष्टि उस पर टिकाता है,

सबसे ऊंचे स्थान पर बैठा व्यक्ति उस ओर बढ़ने का प्रयास करता है। लेकिन मालिक, जो उसके व्यवहार को नापसंद करता है, उसे वापस कर देता है और उसे निचले स्थान पर बैठा देता है। मालिक को धन्यवाद देने के बजाय, वह व्यक्ति क्रोधित हो जाता है और अपने मन में उसकी आलोचना करता है। पहला व्यक्ति बहुत विनम्रता से प्रवेश करता है और सबसे निचले स्थान पर भी बैठने की अपनी इच्छा दिखाता है।

उसकी विनम्रता मालिक को प्रसन्न करती है, जो उसे उच्च स्थान पर बैठने के लिए आमंत्रित करता है और इस तरह उसकी कृतज्ञता को बढ़ाता है। यह संसार सर्व-दयालु के दर्शक-कक्ष की तरह है। पृथ्वी की सतह ईश्वरीय करुणा द्वारा आयोजित भोज की तरह है, जिसमें बैठने की स्थिति के अनुसार प्रावधान और उदारता के विभिन्न स्तर हैं।

हर कोई लालच के बुरे प्रभावों का अनुभव कर सकता है, यहाँ तक कि सबसे छोटी-छोटी बातों में भी। उदाहरण के लिए, आप एक भिखारी से नाराज़ हैं जो लालच से आग्रह करता है और अनुरोध को अस्वीकार करने के लिए इच्छुक है, जबकि आप दया के कारण शांतिप्रिय व्यक्ति को देते हैं। या यदि आप सोने के बारे में नहीं सोचते हैं, तो आप तुरंत सो सकते हैं, बजाय तुरंत सोने की कोशिश करने के। यदि आप अधीर हैं, तो आप अपनी पूरी रात की नींद खो सकते हैं। या, यदि आप अधीरता से किसी का इंतजार करते हैं और लगातार शिकायत करते हैं, तो अंततः आप धैर्य खो देंगे और चले जाएँगे। लेकिन एक मिनट बाद वह व्यक्ति आ जाएगा, और इसलिए आपका उद्देश्य विफल हो जाएगा।

इसका कारण यह है कि खेत जोतने, फसल कटने के बाद ही रोटी बनती है।

अनाज को चक्की में ले जाना और रोटी पकाना। इसी तरह, दिव्य बुद्धि हर चीज़ को एक निश्चित विचार-विमर्श के अनुसार व्यवस्थित करती है। यदि आप इस विचार-विमर्श का पालन नहीं करते हैं और सभी व्यवस्थित चरणों का पालन करने में लापरवाही बरतते हैं, तो आप वांछित परिणाम प्राप्त नहीं कर सकते।

ऐ भाईयों और बहनों, तुम अपनी जीविका कमाने में मस्त हो और इस दुनिया की लालच में पागल हो! जब लालच इतना हानिकारक और नुकसानदेह है, तो तुम इसके लिए खुद को क्यों अपमानित करते हो? तुम जायज़ और हराम में फर्क किए बिना धन क्यों लेते हो, जिससे आख़िरत के लिए ज़रूरी बहुत सी चीज़ें कुर्बान हो जाती हैं? अपने लालच को पूरा करने के लिए तुम ज़कात भी छोड़ देते हो , जो इस्लाम के सबसे अहम स्तंभों में से एक है, जो वृद्धि और प्रजनन क्षमता और दुर्भाग्य को दूर करने का साधन है। जो लोग इसे नज़रअंदाज़ करते हैं, वे या तो बेकार की चीज़ों पर खर्च करके या दुर्भाग्य का सामना करके उतनी ही मात्रा में धन खो देते हैं।

प्रथम विश्व युद्ध के पाँचवें वर्ष में मुझे एक सच्चा, बहुत ही रोचक सपना आया। उस सपने में मुझसे पूछा गया कि मुसलमानों को भूख, आर्थिक नुकसान और शारीरिक कष्ट क्यों झेलना पड़ रहा है। मैंने उत्तर दिया:

---

19 ज़कात: इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है शुद्धिकरण और वृद्धि, क्योंकि मुसलमानों का मानना है कि इससे उनकी संपत्ति शुद्ध होती है। अधिकांश उद्देश्यों के लिए, इसमें किसी की पूंजी का 2.5 प्रतिशत अलग रखना शामिल है, बशर्ते कि यह पूंजी उसके मालिक की ज़रूरतें पूरी होने के बाद एक निश्चित न्यूनतम राशि तक पहुँच जाए, ताकि इसके लिए योग्य लोगों की मदद की जा सके और स्थानीय समुदाय को आम तौर पर लाभ मिल सके। ज़कात को इतना महत्वपूर्ण माना जाता है कि जो लोग इसे अनदेखा करते हैं उन्हें मुस्लिम समुदाय का हिस्सा नहीं माना जाता है। (ट्र.)

अल्लाह तआला हमें जो दौलत देता है, उसमें से **दसवाँ या चालीसवाँ हिस्सा** ज़कात **के रूप में माँगता है** , ताकि हम ग़रीबों की शुक्रगुज़ारी भरी दुआओं से फ़ायदा उठा सकें और उनके द्वेष और ईर्ष्या से बच सकें।20 चूँकि हमारे लालच ने हमें भुगतान करने की इजाज़त नहीं दी, इसलिए अल्लाह तआला ने उसकी जमा की हुई रकम निकाल ली: जहाँ चालीसवाँ हिस्सा था, वहाँ तीन-चौथाई।

बकाया था, और चार-पांचवें जहां दसवां बकाया था।

वह हमसे हर साल एक महीने उपवास करने के लिए कहता है ताकि हम सत्तर से ज़्यादा लाभकारी उद्देश्यों से लाभ उठा सकें। लेकिन हमने खुद पर दया की और उपवास नहीं किया। और इसलिए सर्वशक्तिमान ईश्वर ने हमें पाँच साल तक उपवास करने के लिए मजबूर किया, जिसमें लगभग सत्तर तरह के कष्ट शामिल थे।

परमेश्वर चाहता है कि विश्वासी चौबीस घंटों में से एक घंटा से अधिक समय प्रार्थना में व्यतीत करें, जो ईश्वरीय प्रशिक्षण का एक सुखद, उत्कृष्ट, प्रकाशमान और लाभकारी रूप है।

लेकिन हम पाँचों दैनिक प्रार्थनाओं का पालन करने में बहुत आलसी थे और इसलिए हमने चौबीस घंटे बर्बाद कर दिए। बदले में, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने हमें पाँच वर्षों तक प्रशिक्षण और शारीरिक परिश्रम से गुज़रने के लिए प्रेरित किया।

इसके बाद मैं जागा और इस पर विचार करते हुए मुझे एक बहुत ही महत्वपूर्ण सत्य का एहसास हुआ। जैसा कि पच्चीसवाँ वचन आधुनिक सभ्यता के सिद्धांतों की कुरान के आदेशों से तुलना करके बताता है, मानव सामाजिक जीवन में सभी अनैतिकता और अशांति दो स्रोतों से आती है और

20 उस धन का दसवां हिस्सा जो प्रतिवर्ष नई फसल पैदा करता है; वर्ष के दौरान वित्तीय अधिशेष पैदा करने वाली किसी भी वस्तु का चालीसवां हिस्सा, या कम से कम चालीस चरागाह पशुओं (जैसे भेड़ या बकरी) का। (ट्र.)

दो दृष्टिकोण: “एक बार मेरा पेट भर गया तो मुझे क्या परवाह कि दूसरे भूख से मर जाएं?” और, “तुम काम करो और मैं खाऊंगा।”

ये दृष्टिकोण सूदखोरी और ब्याज के प्रचलन तथा ज़कात के परित्याग से कायम रहते हैं ।

एकमात्र उपाय यह है कि ज़कात को सार्वभौमिक सिद्धांत और कर्तव्य के रूप में लागू किया जाए और फिर सूदखोरी पर प्रतिबंध लगाया जाए। ज़कात व्यक्तियों, विशेष समुदायों और मानवता के लिए एक खुशहाल जीवन जीने के लिए सबसे ज़रूरी स्तंभ है। मानवता में आम तौर पर दो वर्ग होते हैं: अभिजात वर्ग और आम जनता।21 केवल ज़कात ही अभिजात वर्ग की जनता के प्रति करुणा और उदारता और अभिजात वर्ग के प्रति जनता का सम्मान और आज्ञाकारिता जगा सकती है। ज़कात के बिना, अभिजात वर्ग क्रूरतापूर्वक जनता पर अत्याचार करता है और इस तरह अक्सर द्वेष और विद्रोह को जन्म देता है। इस तरह के विकास से निरंतर संघर्ष और विरोध पैदा होता है, जिसका परिणाम अंततः श्रम और पूंजी के बीच टकराव के रूप में सामने आता है, जैसा कि बीसवीं सदी की शुरुआत में रूस में हुआ था।

हे कुलीन और न्यायप्रिय, दानशील और उदार लोगों! यदि तुम उदारता के नाम पर कार्य नहीं करोगे

---

21 बेदीउज्जमां सईद नूरसी ने ज़कात देने वालों के लिए कुलीन शब्द का इस्तेमाल किया है, और इसे पाने के योग्य लोगों के लिए जनसाधारण शब्द का इस्तेमाल किया है। ये पदनाम सापेक्ष हैं, क्योंकि वे स्थानीय धन के मानक पर निर्भर करते हैं।

चूंकि इस्लाम मुसलमानों के बीच गहरे सामाजिक-आर्थिक अंतर की इजाजत नहीं देता, इसलिए इन समूहों के बीच अंतर बहुत अधिक नहीं है।

आज कई मुस्लिम समाजों में, दोनों समूहों के सदस्य मध्यम वर्ग में पाए जा सकते हैं। चूंकि ज़कात का मुख्य उद्देश्य गरीबों को उनके परिवारों के लिए पर्याप्त धन प्राप्त कराना है, इसलिए ज़कात पर विचार करते समय हमें इस्लाम द्वारा परिकल्पित जीवन स्तर पर विचार करना चाहिए। (ट्र.)

ज़कात के मामले में , तुम्हारे काम बेकार और संभावित रूप से हानिकारक हैं। यदि तुम अल्लाह के नाम पर नहीं देते हो, तो तुम गरीब लोगों को अपने ऊपर ऋणी महसूस कराते हो और इस तरह खुद को उनकी नमाज़ों से वंचित कर लेते हो, जो अल्लाह की नज़र में स्वीकार्य हैं।

इसके अलावा, हालाँकि आप अल्लाह के बन्दों में उसकी नेमतों को बाँटने के लिए ज़िम्मेदार अधिकारी हैं, फिर भी आपका यह मानना कि आपकी दौलत आपकी है, बहुत बड़ी कृतघ्नता को दर्शाता है। लेकिन अगर आप ज़कात देते हैं, तो आपको उसके लिए देने का सवाब मिलता है और आप उसे मिली नेमतों के लिए शुक्रिया अदा करते हैं। इसके अलावा, इसके पाने वाले लोग खुशामद या चापलूसी करने के लिए बाध्य नहीं होंगे, और इस तरह अपने आत्मसम्मान को ठेस नहीं पहुँचाएँगे। इसके अलावा, आपके लिए उनकी दुआएँ स्वीकार की जाएँगी।

प्रसिद्धि पाने और दायित्व थोपने के लिए दान देने और अपने धार्मिक कर्तव्य को पूरा करने, पुरस्कार पाने, ईमानदार होने और अपने लिए गरीब लोगों की प्रार्थना स्वीकार करने के लिए ज़कात के रूप में देने के बीच व्यापक अंतर देखें।

तू महिमावान है! हमें कोई ज्ञान नहीं, सिवाय उसके जो तूने हमें सिखाया है। तू सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है।

हे ईश्वर, हमारे गुरु मुहम्मद पर कृपा और शांति प्रदान करें, जिन्होंने कहा, "विश्वासी एक मजबूत इमारत की तरह एक साथ हैं, जिसका एक हिस्सा दूसरे को सहारा देता है," और, "संतुष्टि एक खजाना है जो कभी खत्म नहीं होगा," और उनके परिवार और साथियों पर। और सारी प्रशंसा और कृतज्ञता ईश्वर के लिए है, जो सारे संसार का स्वामी है।

परिशिष्ट: चुगली के संबंध में

उसके नाम पर.

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

आयत 49:12 क्या तुममें से कोई अपने मरे हुए भाई का मांस खाना पसंद करेगा? छह चमत्कारी तरीकों से चुगली करने से घृणा पैदा करती है और दिखाती है कि यह कितना घिनौना काम है। इसलिए आगे कोई स्पष्टीकरण देने की ज़रूरत या संभावना नहीं है। यह चुगली करने वालों को छह तरह की फटकार लगाती है और छह तरह की सख्ती से उन्हें रोकती है। चुगली करने वालों को संबोधित करके पढ़ने पर इसका मतलब है:

मूल अरबी वाक्य की शुरुआत में हम्ज़ा (') प्रश्नवाचक है। यह भाव कविता में पानी की तरह समाया हुआ है, इसलिए प्रत्येक शब्द में प्रश्नवाचक लहजा है। इस प्रकार हम्ज़ा के बाद पहला शब्द पूछता है , "क्या आपके पास पूछने और जवाब देने के लिए कोई बुद्धि नहीं है, ताकि अच्छे और बुरे के बीच अंतर किया जा सके, ताकि आप यह न समझ सकें कि ऐसी चीज़ कितनी घृणित है?"

दूसरा शब्द पूछता है, "क्या तुम्हारा हृदय, जिससे तुम प्रेम करते हो या घृणा करते हो, इतना बिगड़ गया है कि तुम ऐसी घृणित वस्तु से प्रेम करते हो?"

तीसरा, आप में से कोई भी यह वाक्यांश पूछता है, "सामाजिक जिम्मेदारी और सभ्य जीवन की आपकी भावना को क्या हो गया है, जो एक समुदाय के रूप में एक साथ रहने से अपना अर्थ और ऊर्जा प्राप्त करता है, कि आप सामाजिक जीवन के लिए इतनी जहरीली चीज को स्वीकार करने का साहस करते हैं?"

चौथा, मांस खाने का वाक्यांश पूछता है, "तुम्हारी मानवता की भावना को क्या हो गया है कि तुम अपने दोस्त को जंगली जानवर की तरह अपने दांतों से टुकड़े-टुकड़े कर देते हो?"

पाँचवाँ, तुम्हारे भाई [बहन] का वाक्य पूछता है, "क्या तुममें मानवीय कोमलता नहीं है, रिश्तेदारी की भावना नहीं है, कि तुम भाईचारे [बहनापे] की अनेक कड़ियों से बंधे एक निर्दोष व्यक्ति में अपने दाँत गड़ाते हो? क्या तुममें इतनी बुद्धि नहीं है कि तुम इतनी बेवजह अपने ही अंगों को काटते हो?"

छठा, मृत शब्द पूछता है, "तुम्हारा विवेक कहाँ है? क्या तुम्हारा स्वभाव इतना भ्रष्ट है कि तुम अपने मृत भाई [बहन] का मांस खाने जैसा घृणित कार्य करते हो, जो बहुत सम्मान का हकदार है?"

कुल मिलाकर, यह आयत दिखाती है कि निंदा और चुगली करना व्यक्ति की बुद्धि, हृदय, मानवता, विवेक, मानव स्वभाव और धार्मिक तथा सामाजिक एकता के लिए प्रतिकूल है। इसकी निंदा की छह डिग्री बहुत संक्षिप्त और सटीक हैं, और लोगों को छह चमत्कारिक तरीकों से रोकती हैं।

चुगली करना एक शर्मनाक हथियार है जिसका इस्तेमाल आम तौर पर दुश्मनी, ईर्ष्या और हठधर्मिता वाले लोग करते हैं। किसी भी स्वाभिमानी, सम्माननीय व्यक्ति का इससे कोई लेना-देना नहीं है।
एक प्रसिद्ध व्यक्ति ने एक बार कहा था:

> मैं अपने आप को इतना सम्मान देता हूँ कि अपने शत्रु को चुगली करके दण्डित नहीं करता,
> क्योंकि चुगली करना कमज़ोर और नीच लोगों का हथियार है।

चुगली का अर्थ है अनुपस्थित लोगों के बारे में ऐसी बातें कहना जो उन्हें नापसंद हो और परेशान करें।

यदि शब्द सत्य हैं, तो यह चुगली है; यदि वे सत्य नहीं हैं, तो यह चुगली और निंदा दोनों है और इस प्रकार दोगुना घृणित है।

बहुत कम मामलों में, दूसरों के बारे में बोलना उचित होता है।
इनमें से चार हैं:

- अन्याय का शिकार व्यक्ति अपने साथ हुई गलती को सही करने और न्याय बहाल करने के लिए औपचारिक शिकायत प्रस्तुत करता है।
- यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य के साथ सहयोग करने के बारे में सोच रहा है और आपसे पूछता है कि आप उस व्यक्ति के बारे में क्या सोचते हैं, और आप उससे निःस्वार्थ भाव से तथा दोनों के भले के लिए, तथा उसे उचित परामर्श देने के लिए कहते हैं, “उसके साथ सहयोग मत करो; यह तुम्हारा अहित होगा,” तो यह पाप नहीं है।

- यदि आप किसी तथ्य का वर्णन करते हैं और किसी को बदनामी या बदनामी की ओर नहीं ले जा रहे हैं, जैसे कि, "वह विकलांग, बेघर व्यक्ति अमुक स्थान पर गया था।"

- यदि जिस व्यक्ति की आलोचना की जा रही है वह खुला और निर्लज्ज पापी है, जो पाप में आनंद लेता है और गलत काम करने में आनंद लेता है।

ऐसे मामलों में दूसरों के बारे में बोलना जायज़ हो सकता है, बशर्ते कि वह निःस्वार्थ भाव से और केवल सत्य के लिए और सामूहिक हित में किया जाए। अन्यथा, यह आग की तरह है जो अच्छे कर्मों को उसी तरह भस्म कर देती है, जैसे ज्वाला लकड़ी को भस्म कर देती है।

यदि आपने किसी की चुगली की है या जानबूझकर उसकी बात सुनी है, तो ईश्वर से क्षमा मांगिए: "हे ईश्वर, मुझे और जिसके बारे में मैंने बात की है उसे क्षमा कर दीजिए।" जब आप उस व्यक्ति से मिलें, तो क्षमा मांगिए।

अनुक्रमणिका

टी

में

में

साथ